ॐ

जय श्री राम

महाकाल महिमा
एवं
सनातन ज्ञान संग्रह

होइहि सोइ जो राम रचि राखा
को करि तर्क बढ़ावै साखा

धार्मिक | आध्यात्मिक | सांस्कृतिक विशेषांक

हर हर महादेव जय श्री राम

प्रस्तुति
डा अशोक खंडेलवाल

महाकाल बाबा के श्री चरणों में सादर समर्पित

प्रथम पूज्य श्रीगणेश का वंदन

गजानन भूत गणादि सेवितं, कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर पाद पङ्कजम्।

महाकाल एवं उज्जैन का संक्षिप्त वर्णन

महाकालेश्वर मंदिर उज्जैन नगर में मोक्षदायिनी शिप्रा नदी के तट पर स्थित है। उज्जैन उन पवित्र सात नगरों में से एक है जहां की यात्रा मोक्षदायिनी मानी जाती है अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जैन द्वारिका। इसका प्राचीन नाम उज्जयनी है। स्कंद पुराण में इस क्षेत्र को महाकाल वन कहा जाता है अग्नि पुराण के अनुसार सर्वोत्तम तीर्थ है। मान्यता है महाकाल के दर्शन से भय की मुक्ति होती है और व्यक्ति की अकाल मृत्यु से रक्षा होती है। ब्रह्माण्ड में सर्वपूज्य माने जाने वाले तीन लिंगों में से भू लोक अवन्ती के भगवान महाकाल प्रधान है।

आकाशे तारकं लिङ्गं पाताले हाटकेश्वरम्।
भूलोके च महाकालो:, लिङ्गत्रय! नमोऽस्तुते ।।

अर्थात- आकाश में तारक लिंग, पाताल में हाटकेश्वर तथा भू-लोग में महाकाल के रूप में विराजमान आपको नमस्कार है। महाकालेश्वर पृथ्वी के अधिपति है अर्थात वे ही पृथ्वी के एकमात्र राजा है। इसलिये यहां राजाधिराज भगवान के जयकारें गूंजते है।

उज्जैन का 6 कल्पों का इतिहास वर्णित है। प्रथम कल्प में यह स्वर्णशृंगा, द्वितीय में कुशस्थली, तृतीय में अवंतिका, चतुर्थ में अमरावती, पंचम में चुड़ामणी, छठे कल्प में प्रद्मावती नाम से प्रख्यात हुई। इसका उज्जयिनी नाम कालांतर में आया। प्रत्येक कल्प में इस नगरी का अस्तित्व रहा है। प्रलय के पूर्व भी और प्रलय के बाद भी।

विभिन्न पुराणों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उज्जयिनी और महाकालेश्वर की महिमा अनादिकाल से चली आ रही है। तीनों लोकों में महाकालेश्वर का अपना एक निराला अस्तित्व है।

मंगल ग्रह की जन्मभूमि होने का सौभाग्य भी उज्जयिनी को प्राप्त है। महाकवि कालिदास के शब्दों में स्वर्ग से गिरा हुआ एक दैदीप्यमान खण्ड उज्जैन है।

महाकाल की महिमा

कालचक्रप्रवर्तको महाकालः प्रतापनः

अर्थात कालचक्र की प्रवर्तना के कारण ही भगवानशिव महाकाल के रूप में सर्वमान्य हुए। भगवान महाकाल शिव पुराण में उल्लेखित 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। महाकाल इस सृष्टि रचनाक्रम को पूर्णता प्रदान करते है। उन्होंने ही श्रृष्टि की रचना की है और संहार भी किया है। पुराणों में भगवान महाकालेश्वर को मृत्युलोक का स्वामी बतलाया गया है, जो स्पष्ट करता है कि मानव श्रृष्टि का आरम्भ इसी उज्जैन नगरी से हुआ है। अतः महाकाल मृत्युलोकेश्वर है। केवल 12 ज्योतिर्लिंगों में एक मात्र महाकाल ऐसे है जहां भस्म अरती होती है। महाकालेश्वर उज्जयिनी के राजा है ऐसी मान्यता है कि यहां अन्य कोई राजा रात्रि विश्राम नहीं करता है। यदि करता है तो उसकी मृत्यु हो जाती है या अनर्थ हो जाता है। भगवान महाकाल प्रतिवर्ष श्रावण और कार्तिक मास अतिरिक्त विभिन्न अवसरों पर प्रजा का हाल जानने के लिए नगर भ्रमण (सवारी) करते है।

महाकाल के मंदिर में शिव की प्रातःकाल लगभग 3 से 6 बजे भस्मारती एवं पूजा होती है यह समयानुसार बदलती रहती है। अभिषेक के पश्चात महाकाल को चिता भस्म रमाई जाती थी, शास्त्र के अनुसार चिता भस्म अशुद्ध माना गया है। परंतु महाकाल शिव के स्पर्श से भस्म पवित्र होती है। क्योंकि शिव निष्काम है उन्हें काम का स्पर्श नहीं है इसलिए शिवजी मंगलरूप है वर्तमान में चिता भस्म नहीं केवल गाय के ऊपले की भस्म चड़ाई जाती है। यह भस्म भी समाधि स्थल से प्राप्त होती है जो निरंतर प्रज्वलित है। यहां भगवान के सात श्रंगार होते है, जो भस्म आरती देखता है उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती, शंकरजी का अघोरी रूप है। महाकाल की भस्म लगाने से जीवन मृत्यु से छुटकारा प्राप्त होता है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल

बड़ा गणेश

महाकालेश्वर मंदिर के नजदीक संलग्न कोटीतीर्थ कुण्ड के उत्तरी द्वार के निकट अत्यंत भव्य विशाल महागणेश जी की प्रतिमा स्थापित है, जिसके समकक्ष गणेश प्रतिमा देशभर में कहीं नहीं है।

हरसिद्धि मंदिर

उज्जैन के प्राचीन व पवित्र स्थानों में से एक है। देवी हरसिद्धि राजा विक्रमादित्य की आराध्या थी। शिवपुराण के अनुसार देवी सती के कुछ अंग यहां गिरे थे जिससे इसे सिद्धपीठ या शक्तिपीठ भी माना जाता है। मंदिर के सम्मुख दो विशाल द्वीप स्तम्भ है जो वर्तमान में दर्शनार्थियों के लिए आकर्षण और आस्था का केन्द्र है।

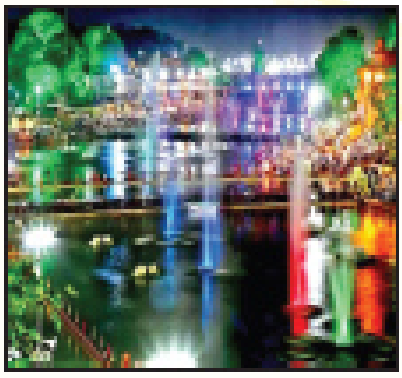

शिप्रा तट

हरसिद्धि मंदिर के ठीक पीछे पूण्यसलीला शिप्रा प्रवाहमान है जो कई ऋषिमुनियों की साधना स्थली रही है। सम्पूर्ण भूमण्डल पर इसके समान कोई ओर नदी नहीं है। माना जाता है कि इसके तट पर क्षणभर खड़े रहने से मुक्ति मिल जाती है। इसीलिए इसे मुक्तिवाहिनी कहा जाता है।

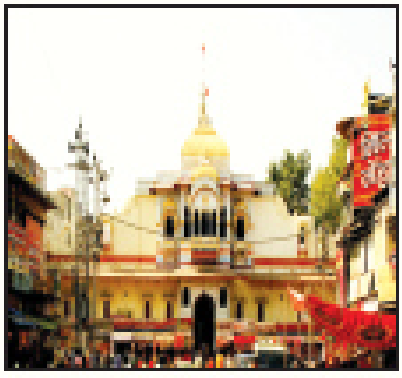

गोपाल मंदिर

नगर के प्राचीन शहर के मध्य यह मंदिर स्थापित है जिसे सिंधिया राजघराने ने निर्मित करवाया। मंदिर का मुख्य द्वार पन्ने के बहुमूल्य पत्थरों से निर्मित है। यहां भगवान गोपाल की प्रतिमा स्थापित है।

गढ़कालिका देवी

यह स्थान प्राचीन अवंति नगरी पर स्थित है। देवी महाकवि कालिदास की आराध्या थी। यह स्थान तांत्रिक सिद्ध है।

भर्तृहरि की गुफा

भर्तृहरि की प्राचीन गुफा है जो नाथ सम्प्रदाय के साधुओं का स्थान है। महारानी पिंगला के अवसान पर भर्तृहरि को संसार से विरक्ती हो गई थी और यहां योग साधना की थी।

पीर मत्स्येन्द्र नाथ

भर्तृहरि गुफा के नजदीक ही नाथसम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य मत्स्येन्द्रनाथ का स्मारक स्थान है। उन्हें सम्प्रदाय ने पीर नाम से ज्ञापित किया था।

कालभैरव

भैरवगढ़ शिप्रा नदी के किनारे पर कालभैरव का मंदिर है। मंदिर में मूर्ति भव्य एवं प्रभावोत्पादक है। यह मूर्ति आज के विज्ञान को चुनौती देती है। भगवान कालभैरव को भक्तगण मदिरा का प्रसाद चढ़ाते है जिसे वह सहर्ष स्वीकार करते है।

सिद्धवट

प्रयाग और गया के अक्षय वट के समान ही इस स्थान का महत्व है। शिप्रा नदी के किनारे यह पवित्र वटवृक्ष स्थित है। यह स्थान श्राद्ध कर्म के लिए विशेष महत्व रखता है।

कालियादेह महल

इस स्थान पर सूर्यमंदिर है। पौराणिक कथा के अनुसार इस स्थान पर 52 कुण्ड अनेको भवबाधाओं से मुक्ति प्रदान करते है।

मंगलनाथ

शिप्रा नदी के किनारे पर मंगलनाथ का भव्य मंदिर है जो कि मंगलगृह की जन्मभूमि माना गया है। इस स्थान का महत्व मंगल गृह से संबंधित लोगों के लिए सर्वाधिक है। मंगल संबंधी दोषों को दूर करने हेतु सम्पूर्ण विश्व से श्रद्धालु यहां आते है।

वैधशाला (जंतर-मंतर) और चिंतामण गणेश

इस स्थान को यंत्र महल के नाम से जाना जाता है। यह स्थान कालगणना के लिए प्रसिद्ध है। यह पुरातन ज्योतिष शास्त्र का केन्द्र रहा है। इस स्थान से कुछ दूर पर ही चिंतामण गणेश का मंदिर है जो दर्शनार्थियों की समस्त चिंताओं का हरण कर अभय प्रदान करते है।

नवगृह शनि मंदिर- यह मंदिर शिप्रा के किनारे राजा विक्रमादित्य द्वारा निर्मित करवाया गया था। यहां की मान्यता है कि मात्र दर्शन से आकांक्षाएं पूर्ण हो जाती है। यह शिप्रा के किनारे त्रिवेणी संगम पर स्थित है।

चक्रतीर्थ- उज्जैन सम्पूर्ण भारत में ऐसा स्थान है जहां श्मसान घाट को तीर्थ स्थल माना गया है।

उज्जैन के अन्य दर्शनीय स्थल

महाकाल मंदिर, श्रीकृष्ण की शिक्षा स्थली सांदीपनि आश्रम, पितृतीर्थ, गढ़कालिका, शनि मंदिर, नवगृह मंदिर, अंगारेश्वर महादेव, त्रिवेणी संगम, चिंतामण गणेश मंदिर, रामजनार्दन मंदिर, चारधाम मंदिर, इस्कॉन मंदिर, पारदेश्वर महादेव मंदिर, वैधशाला (जंतर-मंतर)।

प्रमुख पूजा एवं दर्शन

चौरासी महादेव, सात सागर, नौ नारायण विराजमान है इनकी पूजा का विशेष महत्व है। ये पूजा अधिकमास या श्रावण मास में अधिक फलदाई है।

यहां की मुख्य यात्रा

* पंचक्रोशी यात्रा * चिंतामण गणेश यात्रा * सप्त सागर यात्रा * अष्टतीर्थ यात्रा
* महाकाल यात्रा * नगर प्रदक्षिणा * मंगलनाथ यात्रा * सिद्धनाथ यात्रा * त्रिवेणी यात्रा

शिव पूजन विधि

सुबह जल्दी स्नान करके और सफ़ेद कपडे पहनकर शिव पूजन करना चाहिए। शिव जी की पूजा सुबह में पूर्व दिशा की ओर मुंह करके करनी चाहिए। शाम को शिव जी की पूजा पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके करनी चाहिए। रात्रि को शिव जी की पूजा उत्तर दिशा की ओर मुंह करके करनी चाहिए।

शिव पूजा का सकंल्प

शिव पूजन शुरू करने से पहले सकंल्प लें। संकल्प करने से पहले हाथों में जल, फूल व चावल लें। संकल्प में जिस दिन पूजन कर रहे हैं उस वर्ष, उस वार, तिथि उस जगह और अपने नाम को लेकर अपनी इच्छा बोलें। अब हाथों में लिए गए जल को जमीन पर छोड़ दें।

पूजन विधि

अपने बाएँ हाथ की हथेली में जल लें एवं दाहिने हाथ की अनामिका उँगली व आसपास की उँगलियों से निम्न मंत्र बोलते हुए स्वयं के ऊपर एवं पूजन सामग्रियों पर जल छिड़कें।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्था गतोअपिवा ।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यमायंतरः शुचिः।।

श्रद्धा भक्ति के साथ घी का दीपक लगाएं। दीपक का रोली/कुंकु, अक्षत, पुष्प, से पूजन करें।

धूपबत्ती जलाये

जल भरा हुआ कलश स्थापित कर धूप, दीप, रोली/कुंकु, अक्षत, पुष्प, से पूजन करें।

सर्वप्रथम गणेशजी और गौरी का पूजन करे

अब शिवजी का ध्यान और हाथ में अक्षत पुष्प लेकर नमः शिवाय मंत्र बोलते हुए शिवजी का आवाहन करे। अक्षत और पुष्प शिवलिंग को समर्पित कर दे। अब शिवलिंग का जल, कच्चे दूध और पंचामृत से अभिषेक करे। गन्ने का रस, भांग, शहद, शिवलिंग को अर्पित करे। पुनः शुद्ध जल से अभिषेक करे। चन्दन, अक्षत, इत्र, दूर्वा, बिल्व पत्र, पुष्प और माला अर्पित करे। धुप और दीप दिखाए। शिव जी को चावल सर्वाधिक प्रिय हैं। अतः चावल की खीर, मिठाइयाँ, एवं ऋतुफल जैसे- सेब, चीकू आदि का नैवेद्य अर्पित करे। आचमन के लिए जल अर्पित करे। श्री महाकाल चालीसा का पाठ करे। अंत में शिवजी की कर्पूर आरती करे। पुष्पांजलि समर्पित करे।

कर्पूर गौरं करुणावतारम् ससारं सारम भुजगेन्द्रहारम।
सदावसंतम हृदयारविंदे, भवम भवानी सहितं नमामि।।

शिव पूजा के बाद अज्ञानतावश पूजा में कुछ कमी रह जाने या गलतियों के लिए भगवान् शिव के सामने हाथ जोड़कर निम्नलिखित मंत्र का जप करते हुए क्षमा याचना करे।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरं ।
यत पूजितं मया देव, परिपूर्ण तदत्समेव।
आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनं ।
पूजा चैव न जानामि, क्षमस्व परमेश्वरं।

भगवान शिव को यह न चढ़ाये- तुलसी के पत्ते, नारियल या नारियल का पानी, कुमकुम, हल्दी, केतकी केवड़े के फूल, शंख से शिवजी को जल।

उज्जैन का प्राकृतिक और वैज्ञानिक महत्व

उज्जैन के अक्षांश और सूर्य की परम क्रांति दोनों ही 24 अंश की मानी जाती है। सूर्य के ठीक मस्तक पर स्थिति उज्जैन के अलावा दुनिया के किसी अक्षांश पर प्राप्त नहीं होती। इस विशेषता के कारण उज्जैन विश्व में मात्र ऐसा स्थान है जहां समय (काल) का सही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसी कारण यहां के प्रधान देवता का नाम महाकाल हुआ। उज्जैन भूगोल, खगोल एवं ज्योतिष सभी में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अवंतिका की पवित्र भूमि उज्जयिनी में शिप्रा के तट पर महाकाल शिवलिंग के रूप में अवतरित हुए। तदउपरांत महाकाल मंदिर का निर्माण हुआ। वर्तमान में मंदिर के गर्भगृह में महाकाल विराजमान है। महाकालेश्वर और शिप्रा का संबंध अटूट है।

भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए स्तुति

श्रीरुद्राष्टक

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥ 1॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम् ॥ 2॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम् ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥ 3॥

चलत्कुण्डलं शुभ नेत्रं विशालं प्रसन्ननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ 4॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ 5॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सचिदानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ 6॥

न यावद् उमानाथपादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥ 7॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥ 8॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

भगवान शिव की मानस पूजा अर्चना करने से बिना कुछ अर्पण किये महाकाल प्रसन्न होकर आशीर्वाद प्रदान करते है।

शिव मानस पूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं ।
नाना रत्न विभूषितम् मृग मदामोदांकितम् चंदनम ॥

जाती चम्पक बिल्वपत्र रचितं पुष्पं च धूपं तथा ।
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितम् गृह्यताम् ॥1॥

सौवर्णे नवरत्न खंडरचिते पात्र धृतं पायसं ।
भक्ष्यं पंचविधं पयोदधि युतं रम्भाफलं पानकम् ॥

शाका नाम युतं जलं रुचिकरं कर्पूर खंडोज्ज्वलं ।
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥2॥

छत्रं चामर योर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निमलं ।
वीणा भेरि मृदंग काहलकला गीतं च नृत्यं तथा ॥

साष्टांग प्रणतिः स्तुति-र्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया ।
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥3॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं ।
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ॥

संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो ।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥4॥

कर चरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥5॥

श्री महाकाल चालिसा

दोहा

श्री महाकाल भगवान की महिमा अपरम्पार, पूरी करते कामना भक्तों की करतार।
विद्या - बुद्धि - तेज - बल - दूध - पूत - धन - धान, अपने अक्षय कोष से भगवान करो प्रदान।।

चौपाई

जय महाकाल काल के नाशक। जय त्रिलोकपति मोक्ष प्रदायक।।1।।
मृत्युंजय भवबाधा हारी। शत्रुंजय करो विजय हमारी।।2।।
आकाश में तारक लिंगम्। पाताल में हाटकेश्वरम्।।3।।
भूलोक में महाकालेश्वरम्। सत्यम् - शिवम् और सुन्दरम्।।4।।
क्षिप्रा तट ऊखर शिव भूमि। महाकाल वन पावन भूमि।।5।।
आशुतोष भोले भण्डारी। नटराज बाघम्बरधारी।।6।।
सृष्टि को प्रारम्भ कराते। कालचक्र को आप चलाते।।7।।
तीर्थ अवन्ती में हैं बसते। दर्शन करते संकट हरते।।8।।
विष पीकर शिव निर्भय करते। नीलकण्ठ महाकाल कहाते।।9।।
महादेव ये महाकाल हैं। निराकार का रूप धरे हैं।।10।।
ज्योतिर्मय - ईशान अधीश्वर। परम् ब्रह्म हैं महाकालेश्वर।।11।।
आदि सनातन - स्वयं ज्योतिश्वर। महाकाल प्रभु हैं सर्वेश्वर।।12।।
जय महाकाल महेश्वर जय - जय। जय हरसिद्धि महेश्वरी जय - जय।।13।।
शिव के साथ शिवा है शक्ति। भक्तों की है रक्षा करती।।14।।
जय नागेश्वर - सौभाग्येश्वर। जय भोले बाबा सिद्धेश्वर।।15।।
ऋणमुक्तेश्वर - स्वर्ण जालेश्वर। अरुणेश्वर बाबा योगेश्वर।।16।।
पंच - अष्ट - द्वादश लिंगों की। महिमा सबसे न्यारी इनकी।।17।।
श्रीकर गोप को दर्शन दे तारी। नंद बाबा की पीढ़ियाँ सारी।।18।।
भक्त चंद्रसेन राजा शरण आए। विजयी करा रिपु - मित्र बनाये।।19।।

दैत्य दूषण भस्म किए। और भक्तों से महाकाल कहाए।।20।।
दुष्ट दैत्य अंधक जब आया। मातृकाओं से नष्ट कराया।।21।।
जगज्जननी हैं माँ गिरि तनया। श्री भोलेश्वर ने मान बढ़ाया।।22।।
श्री हरि की तर्जनी से हर - हर। क्षिप्रा भी लाए गंगाधर।।23।।
अमृतमय पावन जल पाया। ऋषि देवों ने पुण्य बढ़ाया।।24।।
नमः शिवाय मंत्र पंचाक्षरी। इनका मंत्र बड़ा भयहारी।।25।।
जिसके जप से मिटती सारी। चिंता - क्लेश - विपद् संसारी।।26।।
सिर जटा - जूट - तन भस्म सजै। डम - डम - डमरू त्रिशूल सजै।।27।।
शमशान विहारी भूतपति। विषधर धारी जय उमापति।।28।।
रुद्राक्ष विभूषित शिवशंकर। त्रिपुण्ड विभूषित प्रलयंकर।।29।।
सर्वशक्तिमान - सर्व गुणाधार। सर्वज्ञ - सर्वोपरि - जगदीश्वर।।30।।
अनादि - अनंत - नित्य - निर्विकारी। महाकाल प्रभु - रूद्र - अवतारी।।31।।
धाता - विधाता - अज - अविनाशी। मृत्यु रक्षक सुखराशी।।32।।
त्रिदल - त्रिनेत्र - त्रिपुण्ड - त्रिशूलधर। त्रिकाय - त्रिलोकपति महाकालेश्वर।।33।।
त्रिदेव - त्रयी हैं एकेश्वर। निराकार शिव योगीश्वर।।34।।
एकादश - प्राण - अपान - व्यान। उदान - नाग - कुर्म - कृकल समान।।35।।
देवदत्त धनंजय रहें प्रसन्न। मन हो उज्जवल जब करें ध्यान।।36।।
अघोर - आशुतोष - जय औढरदानी। अभिषेक प्रिय श्री विश्वेश्वर ध्यानी।।37।।
कल्याणमय - आनंद स्वरुप शशि शेखर। श्री भोलेशंकर जय महाकालेश्वर।।38।।
प्रथम पूज्य श्री गणेश हैं , ऋद्धि - सिद्धि संग। देवों के सेनापति, महावीर स्कंध।।39।।
अन्नपूर्णा माँ पार्वती, जग को देती अन्न।महाकाल वन में बसे, महाकाल के संग।।40।।

दोहा

शिव कहें जग राम हैं, राम कहें जग शिव,
धन्य - धन्य माँ शारदा, ऐसी ही दो प्रीत।
श्री महाकाल चालीसा, प्रेम से, नित्य करे जो पाठ,
कृपा मिले महाकाल की, सिद्ध होय सब काज।।

यह सांध्य आरती के पश्चात प्रार्थना स्वरूप भगवान को प्रसन्न करने हेतु पढ़ा जाता है। इसके पांच श्लोकों में क्रमशः नमः शिवाय है। मनोकामना पूर्ति हेतु 108 बार जाप करें।

॥ श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥1॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय, तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥2॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि'काराय नमः शिवाय ॥3॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय, तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥4॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥5॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥6॥

शिवाष्टकम् भक्तों के कष्ट दूर करने का नित्य पाठ है।
यह मनुष्य को हर बुरी परिस्थितियों से शीघ्र ही मुक्ति दिलाता है।

शिवाष्टकम्

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथ नाथं सदानन्द माजम् ।
भवद्भव्य भूतेश्वरं भूतनाथं, शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमीडे ॥ 1 ॥

गले रुण्डमालं तनौ सर्पजालं महाकाल कालं गणेशादि पालम् ।
जटाजूट गङ्गोत्तरङ्गै र्विशालं, शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमिडे ॥ 2॥

मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं महा मण्डलं भस्म भूषाधरं तम् ।
अनादिं ह्यपारं महा मोहमारं, शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमीडे ॥ 3 ॥

वटाधो निवासं महाट्टाट्टहासं महापाप नाशं सदा सुप्रकाशम् ।
गिरीशं गणेशं सुरेशं महेशं, शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमीडे ॥ 4 ॥

गिरीन्द्रात्मजा सङ्गृहीतार्धदेहं गिरौ संस्थितं सर्वदापन्न गेहम् ।
परब्रह्म ब्रह्मादिभि-र्वन्द्यमानं, शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमीडे ॥ 5 ॥

कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं पदाम्भोज नम्राय कामं ददानम् ।
बलीवर्धमानं सुराणां प्रधानं, शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमीडे ॥ 6 ॥

शरच्चन्द्र गात्रं गणानन्दपात्रं त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् ।
अपर्णा कलत्रं सदा सच्चरित्रं, शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमीडे ॥ 7 ॥

हरं सर्पहारं चिता भूविहारं भवं वेदसारं सदा निर्विकारं।
श्मशाने वसन्तं मनोजं दहन्तं, शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमीडे ॥ 8 ॥

स्वयं यः प्रभाते नरश्शूल पाणे पठेत् स्तोत्ररत्नं त्विहप्राप्यरत्नम् ।
सुपुत्रं सुधान्यं सुमित्रं कलत्रं विचित्रैस्समाराध्य मोक्षं प्रयाति ॥

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तुति

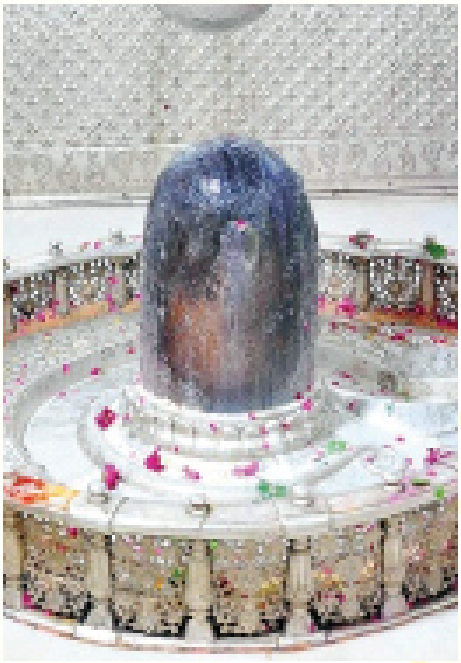

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारं ममलेश्वरम् ॥1॥

परल्यां वैजनाथं च डाकियन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥2॥

वारणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे।
हिमालये तु केदारं ध्रुष्णेशं च शिवालये ॥3॥

एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरेण विनश्यति ॥4॥

ॐ नमः शिवाय (प्रेरक विचार)

ॐ (ॐकार) - ब्रह्म प्रणव है। परम शिव जो सर्वत्र सब जीवों में व्याप्त है। जितना बन के जीव सेवा करें, मानव जीवन धन्य बनें।

न (नम्रता) - हमेशा नम्र बन विनय के साथ सभी से प्रेमभाव बनाकर निर्मल जीवन जीने का प्रयास करें।

मः (महान) - समत्व योग प्राप्त करने की महात्वाकांक्षा हृदय में धारण कीजिये, सुख-दुःख, लाभ-हानि, निन्दा-प्रशंसा आदि में भी समान भाव बनाए रखे।

शि (शिव) - सर्वत्र विराजमान है। वह सर्वात्मा एवं सर्वेश्वर है। सद्व्यवहार एवं जीवमात्र के कल्याण का प्रयास करें।

वा (वाक्य) - ऐस वाक्यों का प्रयोग कीजिये जिसे सुनने वाले को प्रसन्नता हो।

य (यज्ञ) - अहंकार, अनाचार, अविचार एवं अत्याचार को भस्म करने वाला यज्ञ करें तथा पंचाक्षर को सर्व शिवमयं जगत मानकर नित्य आहूति प्रदान करने का प्रयत्न कीजिए। सत्यं शिवं सुन्दरमं ।

श्री महाकाल स्तोत्र

भगवान शिव का त्रिलोक में मुख्य स्वरूप महाकाल का भी है, यानि वे मृत्यु को भी अपने वश में रखते हैं। महामृत्युंजय मंत्र के विषय में तो यह भी माना जाता है कि वह आसन्न मृत्यु को भी टाल सकता है। लेकिन बहुत ही कम महाकाल स्तोत्रं के बारे में जानते हैं, जिसे स्वयं भगवान शिव ने भैरवी को बताया था। इस स्तोत्रं में भगवान शिव के विभिन्न स्वरूपों की स्तुति की गई है। धार्मिक ग्रंथों की मानें तो यह स्तोत्रं भगवान शिव के भक्तों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। प्रतिदिन बस एक बार इस स्तोत्रं का जाप भक्त के भीतर नई ऊर्जा और शक्ति का संचार कर सकता है। इस स्तोत्रं का जाप आपको सफलता के बहुत निकट लेकर जा सकता है।

ऊँ महाकाल महाकाय महाकाल जगत्पत
महाकाल महायोगिन महाकाल नमोस्तुते
महाकाल महादेव महाकाल महा प्रभो
महाकाल महारुद्र महाकाल नमोस्तुते
महाकाल महाज्ञान महाकाल तमोपहन
महाकाल महाकाल महाकाल नमोस्तुते
भवाय च नमस्तुभ्यं शर्वाय च नमो नमः
रुद्राय च नमस्तुभ्यं पशुना पतये नमः
उग्राय च नमस्तुभ्यं महादेवाय वै नमः
भीमाय च नमस्तुभ्यं मिशानाया नमो नमः
ईश्वराय नमस्तुभ्यं तत्पुरुषाय वै नमः
सघोजात नमस्तुभ्यं शुक्ल वर्ण नमो नमः
अधः काल अग्नि रुद्राय रूद्र रूप आय वै नमः
स्थितुपति लयानाम च हेतु रूपआय वै नमः
परमेश्वर रूप स्तवं नील कंठ नमोस्तुते
पवनाय नमतुभ्यम हुताशन नमोस्तुते
सोम रूप नमस्तुभ्यं सूर्य रूप नमोस्तुते
यजमान नमस्तुभ्यं अकाशाया नमो नमः

ऊँ मृत्युंजयाय रुद्राय
नीलकण्ठाय शम्भवे ।
ऊँ अमृतेशाय शर्वाय
महादेवाय ते नमो नमः ।।

उपरोक्त मंत्र का प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर 108 बार जाप करें, सभी कामनायें पूर्ण होगी।

सर्व रूप नमस्तुभ्यं विश्व रूप नमोस्तुते
ब्रहम रूप नमस्तुभ्यं विष्णु रूप नमोस्तुते
रूद्र रूप नमस्तुभ्यं महाकाल नमोस्तुते
स्थावराय नमस्तुभ्यं जंघमाय नमो नमः
नमः उभय रूपा भ्याम शाश्वताय नमो नमः
हुं हुंकार नमस्तुभ्यं निष्कलाय नमो नमः
सच्चिदानंद रूपआय महाकालाय ते नमः
प्रसीद में नमो नित्यं मेघ वर्ण नमोस्तुते
प्रसीद में महेशान दिग्वासाया नमो नमः
ऊँ ह्रीं माया - स्वरूपाय सच्चिदानंद तेजसे
स्वः सम्पूर्ण मन्त्राय सोऽहं हंसाय ते नमः

फल श्रुति

इत्येवं देव देवस्य महकालासय भैरवी
कीर्तितम पूजनं सम्यक सधाकानाम सुखावहम।।

उज्जैयनी पर्यटन स्थल के रूप में

प्राचीन उज्जैन और वर्तमान उज्जैन में बहुत बदलाव आया है। यहां राष्ट्रीय स्तर के प्रसिद्ध नमकीन, मिठाईयों के स्थल है। अगरबत्ती, मेहंदी और पूजन सामग्री के लिये ख्यात है। स्मार्ट सिटी के तहत महाकलेश्वर मंदिर के आसपास महाकाल वन प्रोजेक्ट के अंतर्गत करोड़ों रुपये के निर्माण कार्य हो रहे है जो उज्जैन में पर्यटकों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षित करते है। विभिन्न प्रकार के भोजन, धर्मशालाएं, गेस्ट हाऊस एवं होटल यहां उपलब्ध है। उज्जैन में हर वर्ग, हर व्यक्ति के लिये उसके अनुकूल सुविधाएं सेवाएं उपलब्ध है। वास्तव में यह धरती का स्वर्ग है। यहां अनेक बाग, बगीचे, तालाब, पक्षियों में राष्ट्रीय पक्षी मोर, बंदर, विभिन्न चिड़ियाएं, कबूतर, कौवा (त्रिवेणी) बहुतायत में है। मुख्यतः शाकाहारी भोजन प्रधान शहर है। पोहा, जलेबी, समोसा प्रमुख नाश्ता है। दाल बाफला, लड्डू प्रमुख पसंद का भोजन है। वैसे उज्जैन में विभिन्न तरह का भोजन उपलब्ध है। निःशुल्क भोजन, निःशुल्क आवास से लगाकर सशुल्क में भी ऐसी सभी तरह की सेवाएं उपलब्ध है। यहां पूरे वर्ष विभिन्न उत्सव / आयोजन होते रहते है।

शिवजी की आरती

जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे।
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे।
त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
कर के मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
लक्ष्मी व सावित्री पार्वती संगा।
पार्वती अर्द्धांगी, शिवलहरी गंगा॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
पर्वत सोहैं पार्वती, शंकर कैलासा।
भांग धतूर का भोजन, भस्मी में वासा॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
जटा में गंग बहत है, गल मुण्डन माला।
शेष नाग लिपटावत, ओढ़त मृगछाला॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
काशी में विराजे विश्वनाथ, नन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ दर्शन पावत, महिमा अति भारी॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥
त्रिगुणस्वामी जी की आरति जो कोइ नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवान्छित फल पावे॥ ऊँ जय शिव ओंकारा॥

।। महा मृत्युंजय मंत्र ।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् !!

।।संपुटयुक्त महा मृत्युंजय मंत्र ।।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ !!

अर्थ – हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन-पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं,उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बंधनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाए,जिस प्रकार एक ककड़ी अपनी बेल में पक जाने के उपरांत उस बेल-रूपी संसार के बंधन से मुक्त हो जाती है, उसी प्रकार हम भी इस संसार-रूपी बेल में पक जाने के उपरांत जन्म-मृत्यु के बन्धनों से सदा के लिए मुक्त हो जाएं, तथा आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्यागकर आप ही में लीन हो जाएं.

महामृत्युंजय मंत्र अपने से अकाल मृत्यु तो टलती ही है, आरोग्यता की भी प्राप्ति होती है। स्नान करते समय शरीर पर लोटे से पानी डालते वक्त इस मंत्र का जप करने से स्वास्थ्य-लाभ होता है। इस मंत्र का जप करने से बहुत सी बाधाएं दूर होती हैं, अतः इस मंत्र का यथासंभव जप करना चाहिए। महामृत्युंजय मंत्र से शिव पर अभिषेक करने से जीवन में कभी सेहत की समस्या नहीं आती।

जप से पूर्व जरूरी है निम्न सावधानियां

परम फलदायी इस जप में कुछ सावधानियां रखना चाहिए जिससे कि इसका संपूर्ण लाभ प्राप्त हो सके और किसी भी प्रकार के अनिष्ट की संभावना न रहे।

1. जप का उच्चारण शुद्धता से करें।
2. एक निश्चित संख्या में जप करें। पूर्व दिवस में जपे गए मंत्रों से, आगामी दिनों में कम मंत्रों का जप न करें। यदि चाहें तो अधिक जप सकते हैं।
3. मंत्र का उच्चारण होंठों से बाहर नहीं आना चाहिए। यदि अभ्यास न हो तो धीमे स्वर में जप करें।
4. जप काल में धूप-दीप जलते रहना चाहिए।
5. रुद्राक्ष की माला पर ही जप करें।
6. माला को गौमुखी में रखें। जब तक जप की संख्या पूर्ण न हो, माला को गौमुखी से बाहर न निकालें।
7. जप काल में शिवजी की प्रतिमा, तस्वीर, शिवलिंग या महामृत्युंजय मंत्र पास में रखना अनिवार्य है।
8. महामृत्युंजय के सभी जप कुशा के आसन के ऊपर बैठकर करें।
9. जप काल में दुग्ध मिले जल से शिवजी का अभिषेक करते रहें या शिवलिंग पर चढ़ते रहें।
10. महामृत्युंजय मंत्र के सभी प्रयोग पूर्व दिशा की तरफ मुख करके ही करें।
11. जिस स्थान पर जपादि का शुभारंभ हो, वहीं पर आगामी दिनों में भी जप करना चाहिए।
12. जपकाल में ध्यान पूरी तरह मंत्र में ही रहना चाहिए, मन को इधर-उधर न भटकाएं।
13. जपकाल में आलस्य व उबासी को न आने दें।
14. मिथ्या बातें न करें।
15. जपकाल में भोग विषयों, स्त्री सान्निध्य से दूर रहे । जपकाल में मांसाहार त्याग दें।

॥ जय श्री राम जी ॥

हिंदू (सनातन) धर्म संबंधी संक्षिप्त जानकारी

सनातन अर्थात वह जो अनादि, अनंत और अपरिवर्तनीय है। सनातन धर्म का अर्थ है, वह धर्म जो शाश्वत मूल्यों व सिद्धांतों की अभिव्यक्ति है। हिंदू धर्म की उत्पत्ति वेदों से हुई है। वेद अपौरुषेय है, इसलिए हिंदू धर्म मानव रचित नहीं है। हिंदू धर्म का प्रमुख धर्म चिन्ह ॐ है। प्रमुख धर्म ग्रंथ वेद एवं प्रस्थानत्रीय (उपनिषद, ब्रह्म सूत्र, भगवद गीता) हैं। प्रमुख पूजा स्थल मंदिर हैं।

हिंदू धर्म में 33करोड नहीं 33कोटी देवी देवता हैं। देवभाषा संस्कृत में कोटि के दो अर्थ होते है,कोटि का मतलब प्रकार होता है और एक अर्थ करोड़ भी होता। हिंदू धर्म में कुल 33 प्रकार के देवी देवता हैं। 12 प्रकार हैं, आदित्य- धाता, मित, आर्यमा, शक्रा, वरुण, अँश, भाग, विवास्वान, पूष, सविता, तवास्था, और विष्णु। 8 प्रकार हैं,वासु- धर, ध्रुव, सोम, अह, अनिल, अनल, प्रत्युष और प्रभाष। 11 प्रकार है, रुद्र- हर,बहुरुप, त्रयँबक, अपराजिता, बृषाकापि, शँभू, कपार्दी, रेवात, मृगव्याध, शर्वा, और कपाली। दो प्रकार हैं अश्विनी और कुमार। कुल- 12+8+11+2=33 कोटी

हिंदू धर्म के प्रामाणिक स्तोत्र

1. श्रुति - वेद, महर्षि वेदव्यास ने वेद को चार शिष्यों को पढ़ाया। ऋग्वेद- पैल को, सामवेद- जैमिनी को, यजुर्वेद- वैशम्पायन को एवं अथर्ववेद सुमन्त को।
2. स्मृति - इसके अंतर्गत स्मृति या विधि विधान (जैसे- मनुस्मृति, नारद स्मृति आदि), इतिहास (जैसे- रामायण, महाभारत आदि), पुराण, आगम ग्रंथ और दर्शन सम्मिलित हैं।

हिंदू धर्म के प्रमुख सिद्धांत

1. सभी जीवधारियों में आत्मा का एकत्व (एकेश्वरवाद)। एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति (एक ही ईश्वर है दूसरा नहीं)।
2. ईश्वर एक है परंतु उसे पाने के रास्ते अलग है उसके अनंत रूप व अनंत नाम है। (बहुदेव वाद)
3. अवतारवाद
4. कर्म का सिद्धांत - कर्म का प्रभाव होता है, जिसमें से कुछ प्रारब्ध रूप में होते हैं इसीलिए कर्म ही भाग्य है।
5. पुनर्जन्म में विश्वास
6. आत्मा अमर है।
7. मोक्ष ही जीवन का लक्ष्य है।
8. संस्कारबद्ध जीवन ही जीवन है।
9. ब्रह्मांड अनित्य और परिवर्तनशील है।
10. संध्यावंदन-ध्यान ही सत्य है।
11. वेदपाठ और यज्ञकर्म ही धर्म है।
12. दान ही पुण्य है।

हिंदू धर्म में नवधा भक्ति

1	श्रवणम्	प्रभु लीला सुनना	राजा परीक्षित जी
2	कीर्तनम्	गाकर भजन करना	देवर्षि नारद जी
3	विष्णु-स्मरण	नाम का स्मरण जप	भक्त प्रहलाद जी
4	पाद-सेवनम्	प्रभु चरणों की पूजा सेवा	लक्ष्मीजी
5	अर्चनम्	सेवक की तरह भक्ति करना	श्री भरतजी
6	वंदनम्	भगवान की वंदना करना	श्री अक्रूर जी
7	दास्यम्	भगवान की दास भाव से पूजा करना	भक्त प्रवर हनुमान जी
8	साख्यम्	मित्र भाव से भगवान से प्रेम करना	भक्त श्रेष्ठ अर्जुन
9	आत्म-निवेदन	अपना अच्छा बुरा सबकुछ दीन के अधीन ऐसा भगवान से निवेदन करना।	श्री राधारानी जी

हिंदू धर्म में पंचतत्व संबंधित मान्यता और मानव से उनका संबंध

क्र	तत्व	गुण	इन्द्रियाँ
1	आकाश	शब्द	कान
2	वायु	शब्द, स्पर्श	त्वचा
3	अग्नि	शब्द, स्पर्श, रुप	आँख
4	जल	शब्द, स्पर्श, रुप, रस	जिव्हा
5	पृथ्वी	शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध	नाक

प्रामाणिक उपनिषदों की संख्या

1	ईश (ईशावास्य)	2	केन	3	कठ
4	प्रश्न	5	मुंडक	6	मांडू
7	ऐतरेय	8	तैत्तिरीय	9	छांदोग्य
10	वृहदारण्यक	11	श्वेताश्वतर		

वेद संबंधी जानकारी

क्र	वेद का नाम	वेद का विषय	वैदिक ज्ञान किस ऋषि को मिला	उपवेद	वेद के ब्राह्मण	अन्य जानकारी	वैदिक महावाक्य
01	ऋग्वेद (सबसे बड़ा वेद)	ज्ञान	अग्नि	आयुर्वेद	ऐतरेय	मंडल-10, अष्टक-08, सूक्त-1028, अनुवाक-85, ऋचाएं-10589	प्रज्ञानांब्रम्ह- परम ज्ञान ही ब्रह्म है।
02	यजुर्वेद	कर्म	वायु	धनुर्वेद	शतपथ	अध्याय-40, मंत्र-1975	तत्वमसि- तुम वहीं हो।
03	सामवेद	उपासना	आदित्य	गंधर्ववेद	तांड्य	आरचिक-06, अध्याय-06, ऋचाएं-1875	अयम्आत्मब्रम्ह- मैं ही आत्म ब्रह्म हूं।
04	अथर्ववेद	विज्ञान	अंगिरा	अर्थवेद	गोपथ	कांड-20, सूक्त-731, मंत्र-5977	अहम्ब्रह्मास्मि- मैं ब्रह्म हूं।

वेदों के प्रमुख अंग शिक्षा, कल्प, निरूक्त, व्याकरण, छंद और ज्योतिष है। वेद-ज्ञान के सहायक दर्शन-शास्त्र (उपअंग) और उनके लेखकों के नाम- न्याय दर्शन- गौतम मुनि, वैशेषिक दर्शन- कणाद मुनि, योगदर्शन-पतंजलि मुनि, मीमांसा दर्शन- जैमिनी मुनि, सांख्य दर्शन- कपिल मुनि और वेदांत दर्शन- व्यास मुनि हैं।

आदिनाथ शिव

सर्वप्रथम शिव ने ही धरती पर जीवन के प्रचार-प्रसार का प्रयास किया इसलिए उन्हें 'आदि-देव' भी कहा जाता है। 'आदि' का अर्थ प्रारंभ। आदिनाथ होने के कारण उनका एक नाम 'आदिश' भी है। शिव का धनुष पिनाक, चक्र भवरेंदु और सुदर्शन, अस्त्र पाशुपतास्त्र और शस्त्र त्रिशूल है। उन्होंने ही इन सभी का निर्माण किया था। शिव के नाग का नाम वासुकि है। वासुकि के बड़े भाई का नाम शेषनाग है। शिव के प्रमुख 6 पुत्र हैं- गणेश, कार्तिकेय, सुकेश, जलंधर, अयप्पा और भूमा । शिव के 7 शिष्य हैं- बृहस्पति, विशालाक्ष, शुक्र, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज, जिन्हें प्रारंभिक सप्तऋषि माना गया है। इसके अलावा 8वें गौरशिरस मुनि भी थे। इन ऋषियों ने ही शिव के ज्ञान को संपूर्ण धरती पर प्रचारित किया। शिव ने ही गुरु और शिष्य परंपरा की शुरुआत की थी।

शिव के अवतार हैं- वीरभद्र, पिप्पलाद, नंदी, भैरव, महेश, अश्वत्थामा, शरभावतार, गृहपति, दुर्वासा, हनुमान, वृषभ, यतिनाथ, कृष्णदर्शन, अवधूत, भिक्षुवर्य, सुरेश्वर, किरात, सुनटनर्तक, ब्रह्मचारी, यक्ष, वैश्यानाथ, द्विजेश्वर, हंसरूप, द्विज, नतेश्वर आदि हुए हैं। वेदों में रुद्रों का उल्लेख है । रुद्र 11 बताए जाते हैं- कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, आपिर्बुध्य, शंभू, चण्ड तथा भव।

शिव मंत्र

शिव के दो ही प्रमुख मंत्र हैं- पहला-

ॐ नमः शिवाय ।

दूसरा महामृत्युंजय मंत्र-

ॐ ह्रौं जू सः । ॐ भूःभुवःस्वः।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।
स्वःभुवःभूः ॐ । सः जू ह्रौं ॐ।।

शिवलिंग

वायु पुराण के अनुसार प्रलयकाल में समस्त सृष्टि जिसमें लीन हो जाती है और पुनः सृष्टिकाल में जिससे प्रकट होती है, उसे लिंग कहते हैं। इस प्रकार विश्व की संपूर्ण ऊर्जा ही लिंग की प्रतीक है। वस्तुतः यह संपूर्ण सृष्टि बिंदु-नाद स्वरूप है। बिंदु शक्ति है और नाद शिव। बिंदु अर्थात ऊर्जा और नाद अर्थात ध्वनि। यही दो संपूर्ण ब्रह्मांड का आधार है। इसी कारण प्रतीक स्वरूप शिवलिंग की पूजा-अर्चना की जाती है।

श्रीमद्-भगवत गीता

आज से लगभग 7 हज़ार साल पहले रविवार को एकादशी के दिन लगभग 45 मिनट में कुरुक्षेत्र की रणभूमि में श्रीमद्-भगवत गीता श्रीकृष्ण ने कर्त्तव्य से भटके हुए अर्जुन को कर्त्तव्य सिखाने के लिए और आने वाली पीढियों को धर्म-ज्ञान सिखाने के लिए सुनाई थी। श्रीमद्-भगवत गीता में 18 अध्याय है। गीता में ज्ञान, भक्ति, कर्म योग मार्गो की विस्तृत व्याख्या की गयी है। अर्जुन के अलावा गीता को धृतराष्ट्र एवं संजय ने भी सुना। अर्जुन से पहले गीता का पावन ज्ञान भगवान सूर्यदेव को मिला था। गीता की गिनती उपनिषद में आती है। गीता महाभारत के एक अध्याय शांति-पर्व का हिस्सा है। गीता का दूसरा नाम गीतोपनिषद है। प्रभु श्रीकृष्ण की शरण लेना गीता का सार है। गीता में श्रीकृष्ण जी ने 574, अर्जुन ने 85, धृतराष्ट्र ने 1, संजय ने 40 श्लोक कहे है।

नौ पंक्तियों में महाभारत का सार

1. अगर आप समय रहते अपने बच्चों की अनुचित मांगों और इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं रखते हैं, तो आप जीवन में असहाय हो जाएंगे।- 'कौरव'
2. आप चाहे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, अगर आप अधर्म का साथ देंगे, तो आपकी ताकत, हथियार, कौशल और आशीर्वाद सब बेकार हो जाएंगे। - 'कर्ण'
3. अपने बच्चों को इतना महत्वाकांक्षी न बनाएं कि वे अपने ज्ञान का दुरुपयोग करें और कुल विनाश का कारण बनें।- 'अश्वत्थामा'
4. कभी भी ऐसे वादे न करें कि आपको अधर्मियों के सामने आत्मसमर्पण करना पड़े। - 'भीष्म पितामह'
5. धन, शक्ति, अधिकार का दुरुपयोग और गलत काम करने वालों का समर्थन अंततः पूर्ण विनाश की ओर ले जाता है।- 'दुर्योधन'
6. सत्ता की बागडोर कभी भी किसी अंधे व्यक्ति को न सौंपें, अर्थात जो स्वार्थ, धन, अभिमान, ज्ञान, आसक्ति या वासना से अंधा हो, क्योंकि यह विनाश की ओर ले जाएगा। -'धृतराष्ट्र'
7. यदि ज्ञान के साथ बुद्धि भी हो, तो आप निश्चित रूप से विजयी होंगे। - 'अर्जुन'
8. छल आपको हर समय सभी मामलों में सफलता नहीं दिलाएगा। - 'शकुनि'
9. यदि आप नैतिकता, धर्म और कर्तव्य पालन को बनाए रखते हैं, तो दुनिया की कोई भी शक्ति आपको नुकसान नहीं पहुँचा सकती है।- 'युधिष्ठिर'

सहदेव। **पंच गव्य-** गाय का घी, दूध, दही, गोमूत्र, गोबर।

छः - छह दर्शन- वैशेषिक, न्याय, सांख्य, योग, पूर्व मिसांसा, दक्षिण मिसांसा। **छः ऋतु-** शीत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, बसंत, शिशिर। **छः ज्ञान के अंग-** शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष। **छः कर्म-** देवपूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, दान। **छः दोष-** काम, क्रोध, मद (घमंड), लोभ (लालच), मोह, आलस्य।

सात - सात चक्र- सहस्त्रार, आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान, मूलाधार। **सात वार-** रवि, सोम,मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। **सात मिट्टी-** गौशाला, घुड़साल, हाथीसाल, राजद्वार, बाम्बी की मिट्टी, नदी संगम, तालाब। **सात महाद्वीप-** जम्बुद्वीप (एशिया), प्लक्षद्वीप, शाल्मलीद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप, पुष्करद्वीप। **सात धातु (शारीरिक)-** रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य। **सात पाताल-** अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल। **सप्त ऋषि-** विश्वामित्र, जमदाग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्री, वशिष्ठ और कश्यप। **सप्त पुरी-** अयोध्या पुरी, मथुरा पुरी, माया पुरी (हरिद्वार), काशी, कांची (शिन कांची-विष्णु कांची), अवंतिका और द्वारिका पुरी।

आठ - आठ मातृका- ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, ऐन्द्री, वाराही, नारसिंही, चामुंडा। **आठ लक्ष्मी-** आदिलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी। **आठ वसु-** अप (अहः/अयज), ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्युष, प्रभास। **आठ सिद्धि-** अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व। **आठ योग-** यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि।

नौ - नवदुर्गा- शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री। **नवग्रह-** सुर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु। **नवरत्न-** हीरा, पन्ना, मोती, माणिक, मूंगा, पुखराज, नीलम, गोमेद, लहसुनिया। **नवनिधि-** पद्मनिधि, महापद्मनिधि, नीलनिधि, मुकुंदनिधि, नंदनिधि, मकरनिधि, कच्छपनिधि, शंखनिधि, खर्व/मिश्र निधि।

दस- दस महाविद्या- काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्तिका, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला। **दस दिशाएँ-** पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान, आकाश एवं पाताल। **दस दिशाओं के दस दिग्पाल या देवता-** उर्ध्व (आकाश) के ब्रह्मा, ईशान के शिव व ईश, पूर्व के इंद्र, आग्नेय के अग्नि या वह्नि, दक्षिण के यम, नैऋत्य के नैर्ऋति, पश्चिम के वरुण, वायव्य के वायुदेव और मारुत, उत्तर के कुबेर और अधो (पाताल) के अनंत। **दस सती-** सावित्री, अनुसुइया, मंदोदरी, तुलसी, द्रौपदी, गांधारी, सीता, दमयन्ती, सुलक्षणा, अरुंधती। **दस ध्वनियां-** घंटी, शंख, बांसुरी, वीणा, मंजीरा, करतल, बीन(पुंगी), ढोल, नगाड़ा, मृदंग। **दस कर्तव्य-**

महत्वपूर्ण मंत्र

प्रातःकाल कर दर्शन का मंत्र

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती । करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम् ॥

प्रातः पृथिवी पर पैर रखने का मंत्र

समुद्र वसने देवी पर्वत स्तन मंडिते । विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यं पाद स्पर्शं क्षमश्वमेव ॥

गुरु मंत्र

गुरुर ब्रह्मा गुरुर विष्णु, गुरुरदेवो महेश्वरः । गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

सूर्य अर्घ्य का मंत्र

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥

पीपल में जल देने का मंत्र

आयु: प्रजां धनं धान्यं सौभाग्यं सर्वसम्पदम् । देहि देव महावृक्ष त्वामहं शरणंगतः॥

श्री गणेश पूजन

वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि सम्प्रभ। निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥

श्री विष्णु स्तुति

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरणं सर्वलोकैकनाथम् ॥

गायत्री मन्त्र

ॐ भू र्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो, देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

पूर्ण ब्रह्म की प्रार्थना

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिंद पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाविशष्यते ।

हिंदू धर्म और दर्शन से संबंधित महत्वपूर्ण अंकीय जानकारी

एक- एकेश्वरवाद

दो - **दो लिंग-** नर और नारी। **दो पक्ष -** शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। **दो पूजा पद्धति -** वैदिकी और तांत्रिकी (पुराणोक्त)। **दो अयन -** उत्तरायन और दक्षिणायन।

तीन- तीन देव- ब्रह्मा, विष्णु, महेश। **तीन देवियाँ-** महा सरस्वती, महा लक्ष्मी, महा गौरी। **तीन लोक-** पृथ्वी, आकाश, पाताल। **तीन गुण-** सत्व, रज, तम। **तीन प्रवृत्ति-** सात्विक, राजसिक, तामसिक। **तीन रचनाएँ-** देव, दानव, मानव। **तीनकाल-** भूत, वर्तमान, भविष्य। **तीन नाड़ी-** इडा, पिंगला, सुषुम्ना। **तीनशक्ति-** इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति। **तीन ऋण-** देव ऋण, पितृ ऋण, ऋषि ऋण। **तीन कर्म-** प्रारब्ध, संचित, क्रियमाण।

चार- चार धाम- बद्रीनाथ, जगन्नाथ पुरी, रामेश्वरम्, द्वारका। **चार मुनि-** सनत, सनातन, सनंद, सनत कुमार। **चारवर्ण-** ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। **चार निति-**साम, दाम, दंड, भेद। **चार वेद-** सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद। **चार युग-** सतयुग (17,28000 वर्ष का युग), त्रेतायुग (12,96000 वर्ष का युग), द्वापर युग (8,64000 वर्ष का युग), कलयुग (4,32000 वर्ष का युग)। **चार अप्सरा-** उर्वशी, रंभा, मेनका, तिलोत्तमा। **चार गुरु-** माता, पिता, शिक्षक, आध्यात्मिक गुरु। **चार प्राणी-** जलचर, थलचर, नभचर, उभयचर। **चार जीव-** अण्डज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज। **चार वाणी-** औंकार, अकार, उकार, मकार **चार आश्रम -** ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास। **चार भोज्य पदार्थ -** खाद्य, पेय, लेह्य, चोष्य। **चार पुरुषार्थ-** धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। **चारपीठ-** शारदा पीठ (द्वारिका), ज्योतिष पीठ (जोशीमठ बद्रिधाम), गोवर्धन पीठ (जगन्नाथपुरी), श्रृंगेरीपीठ। **चार अंतःकरण-** मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार।

पाँच- पाँच तत्व-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश। **पाँच देवता-** गणेश, दुर्गा, विष्णु, शंकर, सूर्य। **पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ-** आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा। **पाँच कर्म-** रस, रुप, गंध, स्पर्श, ध्वनि। **पंचाचार-** गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य। **पाँच अमृत-**दूध, दही, घी, शहद, शक्कर। **पाँच प्रेत-**भूत, पिशाच, वैताल, कुष्मांड, ब्रह्मराक्षस। **पाँच वटवृक्ष-**सिद्धवट (उज्जैन), अक्षयवट (प्रयागराज), बोधिवट(बोधगया), वंशीवट (वृंदावन), साक्षीवट (गया)। **पाँच पत्ते-** आम, पीपल, बरगद, गुलर, अशोक। **पाँच कन्या-** अहिल्या, तारा, मंदोदरी, कुंती, द्रौपदी। **पंच महायज्ञ-**देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, अतिथियज्ञ। **पाँच पाण्डव-** युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल,

संध्यावंदन, व्रत, तीर्थ, उत्सव, दान, सेवा, संस्कार, यज्ञ, वेदपाठ, धर्म प्रचार। **दस देवीय आत्मा-** कामधेनु गाय, गरुढ़, संपाति-जटायु, उच्चै:श्रवा अश्व, ऐरावत हाथी, शेषनाग-वासुकि, रीझ मानव, वानर मानव, येति, मकर। **दस देवीय वस्तुएं-** कल्पवृक्ष,अक्षयपात्र,कर्ण के कवच कुंडल, दिव्य धनुष और तरकश, पारस मणि,अश्वत्थामा की मणि, स्यंमतक मणि, पांचजन्य शंख, कौस्तुभ मणि और संजीवनी बूटी। **दस पवित्र पेय-** चरणामृत, पंचामृत, पंचगव्य, सोमरस, अमृत, तुलसी रस, खीर, आंवला रस । **दस उत्सव-** नवसंवत्सर, मकर संक्रांति, वसंत पंचमी, होली, दीपावली, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, महाशिवरात्री और नवरात्रि। **दस धार्मिक स्थल-** 12 ज्योतिर्लिंग, 51 शक्तिपीठ, 4 धाम, 7 पुरी, 7 नगरी, 4 मठ एवं आश्रम, 10 समाधि स्थल, 5 सरोवर, 10 पर्वत और 10 गुफाएं। **दस पूजा के फूल-** आंकड़ा, गेंदा, पारिजात, चंपा, कमल, गुलाब, चमेली, गुड़हल, कनेर, और रजनीगंधा। **दस धार्मिक सुगंध-** गुग्गल, चंदन, गुलाब, केसर, कर्पूर, अष्टगंध, गुढ़-घी, समिधा, मेहंदी, चमेली। **दस यम-नियम-** अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान।

ग्यारह- ग्यारह मुख्य अवतार- मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, श्री राम, श्री कृष्ण, बलराम, बुद्ध एवं कल्कि।

बारह-बारह ज्योतिर्लिंग- सोमनाथ (गुजरात), मल्लिकार्जुन (श्री शैलम, आंध्रप्रदेश), महाकालेश्वर (उज्जैन, मध्यप्रदेश), ओंकारेश्वर (खंडवा, मध्यप्रदेश), वैद्यनाथ (देवघर, झारखंड), भीमाशंकर (महाराष्ट्र में पुणे के पास खेड, राजगुरुनगर के सह्याद्री पर्वतमाला में भोरगिरी गाँव), रामेश्वर (तमिलनाडु), नागेश्वर (द्वारिका, गुजरात), विश्वनाथ (बनारस, उत्तरप्रदेश), त्र्यम्बकेश्वर (नासिक महाराष्ट्र), केदारनाथ (गढ़वाल, उत्तरांचल), घृष्णेश्वर (महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले अब छत्रपति संभाजीनगर में एलोरा गुफाओं के पास वेरुल गाँव में)। **बारह मास-** चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, अषाढ, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फागुन। **बारह राशी-** मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन।

पंद्रह- पंद्रह तिथियाँ-प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा/ अमावास्या।

उन्नीस- उन्नीस मुख्य स्मृतियां- मनु, विष्णु, अत्री, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अंगीरा, यम, आपस्तम्ब, सर्वत, कात्यायन, ब्रहस्पति, पराशर, व्यास, शांख्य, लिखित, दक्ष, शातातप, वशिष्ठ।

सरस्वती स्तुति

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्डमण्डित करा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा।।

श्री महामृत्युञ्जय मंत्र

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ॥

नवग्रह शान्तिमंत्र

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः, सर्वे ग्रहा शान्तिकरा भवन्तु।।

भोजन पूर्व प्रार्थना

हरिर्वाता हरिर्भोक्ता हरिअन्नं प्रजापतिः।
हरिर्विप्रशरीरस्तु भुंक्ते भोजयते हरिः ॥ (ॐ शान्तिः शान्तिःशान्ति)

सोते समय का मंत्र

या देवी सर्वभूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

द्वादश ज्योतिर्लिंगानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् । उज्जयिन्यां महाकालमोंकारं ममलेश्वरम् ॥ 1
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् । सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥ 2
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे । हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥ 3
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः। सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥ 4

माँ नर्मदा अष्टक

सबिंदु सिन्धु सुस्खल तरंग भंग रंजितम
द्विषत्सु पाप जात जात कारि वारि संयुतम ।
कृतान्त दूत काल भुत भीति हारि वर्मदे
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे ॥

त्वदम्बु लीन दीन मीन दिव्य सम्प्रदायकम
कलौ मलौघ भारहारि सर्वतीर्थ नायकं ।
सुमस्त्य कच्छ नक्र चक्र चक्रवाक शर्मदे
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे ॥

महागभीर नीर पुर पापधुत भूतलं
ध्वनत समस्त पातकारि दरितापदाचलम।
जगल्लये महाभये मृ कुं डू सू नु हर्म्यदे
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे ॥

गतं तदैव में भयं त्वदम्बु वीक्षितम यदा
मृ कुं डू सू नु शौनका सुरारी सेवी सर्वदा ।
पुनर्भवाब्धि जन्मजं भवाब्धि दुःख वर्मदे
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे ॥

अलक्षलक्ष किन्न रामरासुरादी पूजितं
सुलक्ष नीर तीर धीर पक्षीलक्ष कुजितम ।
वशिष्ठशिष्ट पिप्पलाद कर्दमादि शर्मदे
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे ।।

सनत्कुमार नाचिकेत कश्यपात्रि षटपदै
धृतम स्वकीय मानषेशु नारदादि षटपदैः ।
रविन्दु रन्ति देवदेव राजकर्म शर्मदे
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे ।।

अलक्षलक्ष लक्षपाप लक्ष सार सायु धं
ततस्तु जीवजंतु तंतु भुक्तिमुक्ति दायकं ।
विरन्वी विष्णु शंकरं स्वकीयधाम वर्मदे
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे ।।

अहोमृतम श्रुवन श्रुतम महेषकेश जातटे
किरात सूत वाड्वेषु पण्डिते शठे नटे ।
दुरंत पाप ताप हारि सर्वजंतु शर्मदे
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे ।।

इदन्तु नर्मदाष्टकम त्रिकलामेव ये सदा
पठन्ति ते निरंतरम न यान्ति दुर्गतिम कदा।
सुलभ्य देव दुर्लभं महेशधाम गौरवम
पुनर्भवा नरा न वै त्रिलोकयंती रौरवम ।।

त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे ।।

श्री राम स्तुति (विनय पत्रिका एवं रामचरित मानस)

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजमन हरण भवभयदारुणम्।
नवकंज लोचन, कंज मुख, कर कंज, पद कंजारुणम्।।
कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरम्।
पटपीतमानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ।।
भज दीनबंधु दिनेश दानव, दैत्यवंश निकंदनम्।
रघुनंद आनन्द कंद कौसलचन्द्र दशरथ नन्दनम् ।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर चाप धर, संग्रामजित खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मनरंजनम्।
मम हृदय कुंज निवास कुरु, कामादि खल दल गंजनम्।।
मन जाहिं राचेउ मिलहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषी अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मंदिर चली।।
जानि गौरी अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे।।

तुलसीदासजी द्वारा श्रीरामजी से निर्भरा भक्ति की याचना एवं हनुमानजी को प्रणाम

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ।।1।।
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये, सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे, कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ।। 2 ।।
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकल गुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।। 3 ।।

(सुन्दरकाण्ड प्रारंभ)

श्री हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
शंकर स्वयं केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुरजाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ें हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

:: दोहा ::

पवन तनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ।।

संकट मोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्ष लियो तब, तीनहुं लोक भयो अंधियारों।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब, छाड़ी दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महामुनि साप दियो तब, चाहिए कौन बिचार बिचारो।
कैद्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाये इहां पगु धारो।
हेरी थके तट सिन्धु सबे तब, लाए सिया-सुधि प्राण उबारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

रावण त्रास दई सिय को सब, राक्षसी सों कही सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

बान लाग्यो उर लछिमन के तब, प्राण तजे सूत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोण सुबीर उपारो।
आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

रावन युद्ध अजान कियो तब, नाग कि फांस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

बंधू समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देविहिं पूजि भलि विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र विचारो।
जाये सहाए भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

काज किए बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसे नहिं जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होए हमारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

।। दोहा। ।
लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

शास्त्रों के अनुसार, पूजा अर्चना में वर्जित कार्य

1 गणेश जी को तुलसी न चढ़ाएं।

2 देवी पर दुर्वा न चढ़ाएं।

3 शिव लिंग पर केतकी फूल न चढ़ाएं।

4 भगवान विष्णु को तिलक में अक्षत न चढ़ाएं।

5 दो शंख एक समान पूजा घर में न रखें।

6 मंदिर में तीन गणेश मूर्ति न रखें।

7 तुलसी पत्र चबाकर न खाएं।

8 द्वार पर जूते चप्पल उल्टे न रखें।

9 मंदिर से वापिस लौटते समय घंटा न बजाएं।

10 एक हाथ से आरती न लें।

11 ब्राह्मण को बिना आसन न बिठाएं।

12 स्त्री को दंडवत प्रणाम वर्जित है।

13 बिना दक्षिणा ज्योतिषी से प्रश्न न पूछें।

14 घर मंदिर में अंगूठे से बड़ा शिवलिंग न रखें।

15 तुलसी पेड़ के पास शिवलिंग न रखें।

16 गर्भवती महिला शिवलिंग स्पर्श न करे।

17 चरणामृत पीकर हाथों को शिर या शिखा पर न पोछें बल्कि आंखों पर लगायें । शिखा पर गायत्री का निवास होता है, उसे अपवित्र न करें।

18 मंदिर में प्रवेश के समय पहले दाहिना और निकास के समय बायां पांव रखे।

19 मंदिर ज्यादा दूर नहीं है तो बिना जूते चप्पल पैदल जाना चाहिए।

20 शिव जी की पूरी परिक्रमा न करें।

21 शिव लिंग से बहते जल को न लांघें।

22 एक हाथ से प्रणाम न करें।

23 दूसरे के दीपक से अपना दीपक न जलाएं।

24 चरणामृत लेते समय बूंद नीचे न गिरे।

25 देवताओं को लोभान का धूप न करें।

26 स्त्री हनुमानजी को स्पर्श न करें।

27 कंवारी कन्याओं से पैर स्पर्श न करावें।

28 मंदिर परिसर में स्वच्छता रखे।

29 शराबी का मंदिर प्रवेश वर्जित है।

30 घंटी को जोर से न बजायें।

31 मंदिर जाने के लिए धोती कुर्ता रखें।

32 स्त्री मंदिर में नारियल न फोडें।

33 रजस्वला स्त्री मंदिर में प्रवेश न करें।

34 सूतक में पूजा प्रतिमा स्पर्श न करें।

35 मंदिर में लाईन पर लगे हुए, भगवान का नाम स्मरण करते रहे।

36 मंदिर में भगवान के दर्शन खुले नेत्रों से करें और दो मिनट बैठकर भगवान के माधुर्य रुप का दर्शन अवश्य करें।

37 आरती लेने अथवा दीपक का स्पर्श करने के बाद हस्तप्रक्षालन अवश्य करें।

आरती हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।
जाके बल से गिरिवर कांपै। रोग दोष जाके निकट न झांपै ।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये ।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई ।।
लंका जारि असुर संहारे। सीयारामजी के काज संवारे ।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे ।।
पैठिपताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे ।।
बाये भुजा असुरदल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे ।।
सुर नर मुनिजन आरती उतारे। जय जय जय हनुमान उचारे ।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई ।।
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावें ।।

श्री लक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु धाता ॥
ब्रह्माणि रुद्राणि कमला तुहि है जगमाता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत् नारद ऋषि गाता ॥ 1 ॥
दुर्गारूप निरञ्जनि सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि सिद्धि धन पाता ॥ 2 ॥
तुम पाताल निवासिनी, तुम ही शुभदाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशनी जगनिधि की दाता ॥ 3 ॥
जिस घर तेरा वासा वाही में सब गुण आता।
करना चाहे सोई करले मन नहीं घबराता ॥ 4 ॥
तुम बिन यज्ञ नहीं होवे वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव सब तुमसे आता ॥ 5 ॥
शुभगुण मंदिर सुन्दर क्षीरो निधि जाता।
रतन चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता ॥ 6 ॥
महालक्ष्मीजी की आरती जो कोई नर गाता।
उर आनन्द अति उमगे सब दुःख भग जाता ॥ 7 ॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशि दिन ध्यावें हर विष्णु धाता ॥ 8 ॥

श्री जगदीश जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ।।
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनसे मन का।
सुख-सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का ।।
मात-पिता तुम मेरे शरण गहुँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी ।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ।।
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता ।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता ।।
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय तुमको मैं कुमति ।।
दीन - बंधु दुःख हर्ता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठावो द्वार पड़ा तेरे ।।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ।।
ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे ।

।। श्री माँ अम्बा जी की आरती ।।

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावें, शिव ब्रह्मा गौरी ।।
मांग सिन्दूर बिराजे, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोऊ नयना, चन्द्रवदन नीको ।।
कानन कुण्डल शोभित, नासा गज मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम जोती।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।
रक्त पुष्प वर माला, कण्ठन पर छाजे ।।
केहरि वाहन राजत, खडग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुखहारी ।।
शुम्भ निशुम्भ बिडारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नयना, निशदिन मदमाती ।।
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैंरो।
बाजत ताल मृदंग, अरु बाजत डमरु ।।
भुजा अष्ट अति शोभित, चक्र त्रिशूल धारी।
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।।
कंचन थाल विराजे, अगर कपूर बाती।
माल केतु में राजत, कोटि रतन जोती ।।
आदि शक्ति की आरती, जो कोई जन गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित फल पावे।।
ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावै, शिव ब्रह्मा गौरी ।।

।। श्री गणेशजी की आरती ।।

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ।।
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी।
माथे पर सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी ।।
पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डूअन का भोग लगे, संत करे सेवा ।।
अंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ।।
सूर श्याम शरण आए सफल कीजे सेवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
दीनन की लाज राखो, शंभु सुतकारी।
कामना को पूर्ण करो, जाऊं बलिहारी।।
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ।।

श्री नर्मदा जी की आरती

ॐ जय जगदानन्दी, मैया जय आनन्द कन्दी ।
ब्रह्मा हरिहर शंकर रेवा, शिव हरिशंकर रुद्री पालन्ती ॥ 1 ॥
देवी नारद शारद तुम वरदायक, अभिनव पदचण्डी।
सुर नर मुनिजन सेवत, सुर नर मुनि शारद पदवन्ती ॥2॥
देवी धूम्रक वाहन, राजत वीणा वादयन्ती ।
झूमकत झूमकत झूमकत, झननझननन रमतीराजन्ती ॥ 3 ॥
देवी बाजत ताल मृदंगा, सुर मण्डल रमती ।
तोड़ीतान तोड़ीतान तोड़ीतान, तुरड़ड़ तुरड़ड़ रमती सुरवन्ती ॥4॥
देवी सकल भुवन पर आप विराजत, निशदिन आनन्दी।
गावत गंगा शंकर सेवत रेवा शंकर, तुम भव मेटन्ती ॥5 ॥
मैया जी को कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
अमर कंठ में विराजत घाटन घाट विराजत, कोटि रत्न ज्योति ॥6॥
मैया जी की आरती निशदिन पढ़गावे, हो रेवा जुग जुग नर गावे।
भजत शिवानन्द स्वामी जपत हरी नंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥7॥

उज्जैन खंड

पुरुषोत्तम मास में श्री भगवान महाकालेश्वर की नगरी उज्जैन में स्थित चौरासी महादेव, सप्त सागर और नौ नारायण की यात्रा, पूजन एवं दान एवं उज्जैन दर्शन

पुरुषोत्तम मास में चौरासी महादेव की यात्रा एवं पुण्य लाभ

भगवान श्री महाकालेश्वर की नगरी उज्जैन में चौरासी महादेव, सप्त सागर एवं नौ नारायण विराजमान हैं। श्रावण मास एवं पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) में इन स्थानों की यात्रा, परिक्रमा एवं पूजन का विशेष महत्व है। यह भी कहा जाता है कि प्रलय के समय 84 महादेव ही अचल रहेंगे।

चौरासी महादेव की पौराणिक कथा के अनुसार, जब अवंतिका (उज्जैन) में वज्रासुर (कुछ कथाओं में दूषण नामक असुर) ने धर्म का नाश कर ऋषि-मुनियों को सताना शुरू किया, तब भगवान शिव ने भक्तों की रक्षा के लिए 84 अलग-अलग रूपों में महाकाल वन क्षेत्र में प्रकट होकर उन असुरों का वध किया और विभिन्न स्थानों पर स्थापित हो गए।

स्कंद पुराण के अनुसार, चौरासी महादेव यात्रा, पूजन 84 लाख योनियों से मुक्ति और कष्ट निवारण के लिए अत्यंत फलदायी है। इनके दर्शन व पूजन से सभी प्रकार के पाप नष्ट होते हैं, जन्म-जन्मांतर के दोष दूर होते हैं और मनोकामना पूर्ण होती है।

चौरासी महादेव पूजन और यात्रा विधि -

यात्रा क्रम - इस यात्रा, पूजन का प्रारंभ व समापन अगस्त्येश्वर महादेव मंदिर (हरसिद्धि मंदिर के पीछे स्थित) से होता है।श्रद्धालु प्रातः स्नान कर, शुद्ध मन से प्रत्येक मंदिर में महादेव पर जलाभिषेक, बेलपत्र, भांग, धतूरा, चंदन व भस्म अर्पित कर 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र के साथ पूजा करते हैं।

पूजन सामग्री - गंगाजल, पंचामृत, बेलपत्र, भांग, जनेऊ, पैसा एवं सुपारी, चावल (अक्षत), धतूरा, शमी पत्र, चंदन, भस्म, मिश्री और कपूर।

पूजन विधि - शिवलिंग पर प्रथम जलाभिषेक करें। पंचामृत और सुगंधित द्रव्य (चंदन) अर्पित करें। 11 या 21 बेलपत्र 'ॐ साम्ब शिवाय नमः' मंत्र के साथ अर्पित करें। धूप, दीप और नैवेद्य अर्पित कर आरती करें।

महादेव के 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप करें।

पूजन के अंत में पंचाक्षर स्तोत्र 'नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय। नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मै न काराय नमः शिवाय' एवं क्षमा प्रार्थना 'आह्वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजांचैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर' का वाचन करना चाहिए। यदि मंत्रों के वाचन में कोई समस्या हो तब आप अपनी सुविधा और श्रद्धा के अनुसार सबसे सरल और शक्तिशाली मंत्र 'ॐ नमः शिवाय' का जाप कर सकते हैं।

चौरासी महादेव
कहां-कहां विराजमान हैं

क्र.	चौरासी महादेव का नाम	विवरण, कहां स्थित है
01	श्री अगस्त्येश्वर महादेव	हरसिद्धि मंदिर के पीछे, संतोषी माता के मंदिर में विराजमान है। यात्रा यहीं से प्रारंभ होती है, तथा यात्रा के समापन पर पुन: श्री अगस्त्येश्वर महादेव के दर्शन-पूजन के उपरांत यात्रा पूर्ण होती है।
02	श्री गुहेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के किनारे रामघाट पर बिना शिखर का मंदिर, श्री धर्मराजजी मंदिर के पास स्थित है।
03	श्री ढूंढेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के किनारे रामघाट के सामने राम सीढ़ी पर बाईं ओर स्थित है।
04	श्री डमरूकेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के किनारे रामघाट पर, राम सीढ़ी पर विराजमान है।
05	श्री अनादिकल्पेश्वर महादेव	महाकाल मंदिर क्षेत्र के अंदर जूना महाकाल मंदिर के पास विराजित है।
06	श्री स्वर्णज्वालेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के किनारे रामघाट के सामने राम सीढ़ी पर, श्री ढूंढेश्वर महादेव के ऊपर विराजमान है।
07	श्री त्रिविष्टेश्वर महादेव	महाकाल मंदिर क्षेत्र में, ओंकारेश्वर मंदिर के पीछे और महाकाल के सभा मंडप की सीढ़ी के पास विराजित है।
08	श्री कपालेश्वर महादेव	अनन्त पेठ, दानी दरवाजे के पास, श्री अवंतिपार्श्वनाथ तीर्थ के चौराहे से बड़े पुल जाने पर, घाटी पर बाईं ओर स्थित है।
09	श्री स्वर्णद्वारपालेश्वर महादेव	महाकाल चौराहे से हरिफाटक ब्रिज जाने पर, बाईं ओर पुलिया के नीचे विराजमान है।
10	श्री कर्कोटेश्वर महादेव	हरसिद्धि मंदिर के परिसर में स्थित है।

11	श्री सिद्धेश्वर महादेव	श्री सिद्धनाथ मंदिर में, सिद्धनाथ घाट के नए दरवाजे के पास है।
12	श्री लोकपालेश्वर महादेव	कार्तिक चौक के पास हरसिद्धि दरवाजा, रघुवंशी मार्ग की दाईं ओर की गली में, सीधे चौक में है।
13	श्री मनकामेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के छोटे पुल से रामघाट जाने के मार्ग पर, गंधर्व घाट पर उदासीन अखाड़े के पास विराजित है।
14	श्री कुटुम्बकेश्वर महादेव	कार्तिक चौक सिंहपुरी में श्री गोवर्धननाथजी की हवेली से आगे स्थित है।
15	श्री इन्द्रप्रद्युम्नेश्वर महादेव	पटनी बाजार से मोदीजी के गली में, खोखा माता मंदिर से पहले विराजित है।
16	श्री ईशानेश्वर महादेव	पटनी बाजार से मोदीजी के गली में, श्री इन्द्रप्रद्युम्नेश्वर महादेव से पहले विराजमान है।
17	श्री अप्सरेश्वर महादेव	पटनी बाजार के पास सुगंधी गली में स्थित है।
18	श्री कलकलेश्वर महादेव	पटनी बाजार क्षेत्र में श्री ईशानेश्वर महादेव से आगे की पहली गली में दाईं ओर विराजित है।
19	श्री नागचंद्रेश्वर महादेव	पटनी बाजार के पास नागनाथ की गली में स्थित है।
20	श्री प्रतिहारेश्वर महादेव	पटनी बाजार के पास नागनाथ की गली में श्री नागचंद्रेश्वर मंदिर के परिसर में ही विराजमान है।
21	श्री कुक्कुटेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के छोटे पुल से रामघाट जाने के मार्ग पर उदासीन अखाड़े के पास विराजित है।
22	श्री कर्कटेश्वर महादेव	ढाबा रोड से दानी गेट पर श्री पोरवाल धर्मशाला के पास गली से सीधे, अंदर दाहिने हाथ पर विराजमान है।
23	श्री मेघनादेश्वर महादेव	सतीगेट से गोपाल मंदिर मार्ग पर पहली गली, छोटा सराफा में नरसिंग मंदिर के पीछे स्थित है।
24	श्री महालयेश्वर महादेव	श्री सिद्धेश्वर महादेव के पीछे बायी ओर की गली में चौक में स्थित है।

25	श्री मुक्तेश्वर महादेव	श्री सिद्धेश्वर महादेव के पीछे सीधे दाहिने ओर की गली में, लेफ्ट साइड की पहली गली में विराजित है।
26	श्री सोमेश्वर महादेव	श्री अवंतिपार्श्वनाथ तीर्थ के चौराहे से बड़े पुल जाने पर, घाटी पर दाईं ओर विराजित है।
27	श्री अनकेश्वर महादेव	आगर रोड पर, मकोडिया आम चौराहे से अंकपात जाने के मार्ग पर, बिजलीघर से आगे, बाईं ओर की पहली गली में स्थित है।
28	श्री जटेश्वर महादेव	अंकपात चौक से मकोडिया आम जाने की सड़क पर मंदिर के आँगन में नया मंदिर है।
29	श्री रामेश्वर महादेव	सती दरवाजे के पास रामेश्वर गली में विराजमान है।
30	श्री च्यवनेश्वर महादेव	अंकपात से इंदिरा नगर जाने वाले मार्ग पर ईदगाह के पास स्थित है।
31	श्री खंडेश्वर महादेव	आगर रोड मकोडिया आम से आगे आर.डी.गार्डी कॉलेज रोड पर खिलचीपुर गांव में टीले पर विराजमान है।
32	श्री पत्तनेश्वर महादेव	आगर रोड मकोडिया आम से आगे आर.डी.गार्डी कॉलेज के रोड पर पुलिया से पहले विराजमान है।
33	श्री आनंदेश्वर महादेव	चक्रतीर्थ के गेट से आगे, दाहिने ओर ऊपर विराजमान है।
34	श्री कंठडेश्वर महादेव	भैरवगढ़ गांव के अंदर, सिद्धनाथ मंदिर के सामने की गली में, ऊपर घाटी पर विराजमान है।
35	श्री इन्द्रेश्वर महादेव	श्री अवंतिपार्श्वनाथ तीर्थ के चौराहे से बड़े पुल की ओर जाने पर, घाटी के ठीक ऊपर, बाईं ओर स्थित है।
36	श्री मार्कण्डेश्वर महादेव	अंकपात मार्ग में राम जनार्दन मंदिर के पास, विष्णुसागर पर विराजमान है।
37	श्री शिवेश्वर महादेव	राम जनार्दन मंदिर की सीढ़ी पर विराजमान है।

38	श्री कुसुमेश्वर महादेव	राम लक्ष्मण मंदिर परिसर में द्वारकाधीश मंदिर की सीढ़ियों के नीचे विराजमान है।
39	श्री अक्रूरेश्वर महादेव	राम जनार्दन मंदिर के बाहर ठीक सामने विराजमान है।
40	श्री कुण्डेश्वर महादेव	अंकपात चौराहे से आगे महाप्रभु जी की बैठक (सांदीपनि आश्रम) के परिसर में विराजमान है।
41	श्री लुम्पेश्वर महादेव	भैरव गढ़ पुल के पार, दाहिने ओर, पुलिस लाइन में अंदर स्थित है।
42	श्री गंगेश्वर महादेव	मंगलनाथ चौक में नदी के किनारे पर स्थित है।
43	श्री अंगारेश्वर महादेव	मंगलनाथ के पीछे कमेड गांव में स्थित है।
44	श्री उत्तरेश्वर महादेव	मंगलनाथ चौक में श्री गंगेश्वर महादेव के आगे विराजमान है।
45	श्री त्रिलोचनेश्वर महादेव	मंगलनाथ रोड से लालबाई फूलबाई मार्ग पर, बाई ओर की गली में दाई ओर की गली में स्थित है।
46	श्री वीरेश्वर महादेव	ढाबा रोड पर सत्यनारायण मंदिर के पास विराजित है।
47	श्री नुपूरेश्वर महादेव	डाबरी पीठा में सुतारगली में स्थित है।
48	श्री अभयेश्वर महादेव	ढाबा रोड से दानी गेट पर, श्री पोरवाल धर्मशाला से आगे, नदी मार्ग पर बाई ओर की पहली गली में विराजित है।
49	श्री प्रथुकेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के छोटे पुल से राम बाग जाने के मार्ग पर नदी की रपट के पास श्री कैदारेशश्वर महादेव परिसर में स्थित है।
50	श्री स्थावरेश्वर महादेव	श्री कालिदास मॉन्टेसरी स्कूल, बम्बाखाना के सामने, नईपेठ में, शनि मंदिर के अंदर विराजमान है।
51	श्री सुलेश्वर महादेव	ढाबा रोड से दानी गेट पर श्री पोरवाल धर्मशाला के पास में, गली से आगे श्री कर्कटेश्वर महादेव से आगे, बायी ओर की गली में विराजित है।

52	श्री ओंकारेश्वर महादेव	गोपाल मंदिर से कमरी मार्ग जाते समय बायी ओर की पहली गली से सीधे अंदर स्थित है।
53	श्री विश्वेश्वर महादेव	गोपाल मंदिर से कमरी मार्ग जाते समय बायी ओर की पहली गली से सीधे अंदर, श्री ओंकारेश्वर महादेव से आगे दाहिनी ओर की गली के कोने पर विराजित है।
54	श्री नीलकण्ठेश्वर महादेव	पीपलीनाका चौराहा से बाईपास रोड पर दाई ओर स्थित है।
55	श्री सिंहेश्वर महादेव	गढकालिका क्षेत्र में गणपति मंदिर के बाजू के रास्ते पर से आगे स्थित है।
56	श्री रेवंतेश्वर महादेव	खाती मंदिर से कार्तिक चौक मार्ग पर, मंदिर के अंदर विराजमान है।
57	श्री घंटेश्वर महादेव	कार्तिक चौक के तिराहे पर स्थित है।
58	श्री प्रयागेश्वर महादेव	शिप्रा के बड़े पुल से पीपलीनाका जाने वाले मार्ग पर, ऋणमुक्तेश्वर मंदिर से पहले विराजमान है।
59	श्री सिद्धेश्वर महादेव	गोपाल मंदिर के पीछे खत्री वाडा में गली में स्थित है।
60	श्री मातंगेश्वर महादेव	टंकी चौराहा के पास पिंजारवाडी में विराजमान है।
61	श्री सौभाग्येश्वर महादेव	पटनी बाजार के पास सौभाग्येश्वर की गली में विराजित है।
62	श्री रुपेश्वर महादेव	सिंहपुरी में आताल -पाताल भैरव से श्री गोवर्धननाथजी की हवेली की ओर जाने के मार्ग पर बाई ओर की गली में स्थित है।
63	श्री धनुसहस्त्रेश्वर महादेव	पीपलीनाका से तिलकेश्वर मंदिर के पास की गली में, महाजन बस्ती में विराजित है।
64	श्री पशुपतेश्वर महादेव	सब्जी मंडी से चक्र तीर्थ के बीच, बाईपास में पहली गली में, घाटी के ऊपर विराजमान है।
65	श्री ब्रह्मेश्वर महादेव	ढाबा रोड से दानीगेट मार्ग, पोरवाल धर्मशाला के पास

		की गली में, अंदर बायें हाथ की ओर पहली गली में विराजित है।
66	श्री जल्पेश्वर महादेव	बड़े पुल से गांधी उद्यान से पहले राइट साइड के रास्ते पर नदी के पास विराजित है।
67	श्री केदारेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के छोटी पुलिया से राम बाग मार्ग पर पुलिया के राइट साइड में मंदिर है।
68	श्री पिशाचमुक्तेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के किनारे रामघाट पर स्थित है।
69	श्री संगमेश्वर महादेव	श्री अगस्तेश्वर महादेव मंदिर के पास गेट से सीधे, सीढ़ियों के नीचे विराजमान है।
70	श्री धूर्जटेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के गंधर्व घाट पर श्री कुक्कुटेश्वर महादेव मंदिर के पास विराजित है।
71	श्री प्रयागेश्वर महादेव	कार्तिक चौक से रघुवंशी मार्ग पर, सीधे हाथ की गली में सीधे चौक में, श्री लोकपालेश्वर महादेव मंदिर के पास विराजित है।
72	श्री चंद्रादित्येश्वर महादेव	श्री महाकाल मंदिर के अंदर सभामंडप में कुंड के पास, शंकराचार्य की मूर्ति के पास विराजित है।
73	श्री करभरेश्वर महादेव	भैरवगढ़ में, कालभैरव मंदिर के सामने, पुलिया के पास स्थित है।
74	श्री राजस्थलेश्वर महादेव	भागसीपुरा में, आनंद भैरव के पास की गली में, कोने पर विराजमान है।
75	श्री बड़लेश्वर महादेव	भैरवगढ़ में श्री सिद्धनाथ मंदिर, सिद्धनाथ के सामने स्थित है।
76	श्री अरुणेश्वर महादेव	शिप्रा नदी के किनारे रामघाट पर, राम सीढ़ी के किनारे, श्री धर्मराज महाराज के पास विराजित है।
77	श्री पुष्पदंतेश्वर महादेव	कार्तिक चौक के तिराहे से रघुवंशी मार्ग जाने पर, बाई ओर की गली में, घाटी के ऊपर विराजमान है।

78	श्री अभिमुक्तेश्वर महादेव	सिंहपुरी मार्ग पर मंगलनाथ मंदिर से आगे विराजमान है।
79	श्री हनुमंतेश्वर महादेव	गढकालिका से विक्रांत भैरव जाने वाले मार्ग परश्री सिंहेश्वर महादेव मंदिर से आगे स्थित है।
80	श्री स्वप्नेश्वर महादेव	श्री महाकाल मंदिर परिसर में विराजित है।
81	श्री पिंगलेश्वर महादेव	फ्रीगंज से मक्सी रोड पर, श्री सिंथेटिक फैक्ट्री के पास, रेलवे पुलिया के नीचे विराजमान है।
82	श्री कायावरोहणेश्वर महादेव	उज्जैन से इंदौर मार्ग पर तपोभूमि के पास के रास्ते पर, करोहन गांव में स्थित है।
83	श्री बिल्वकेश्वर महादेव	गंभीर डेम मार्ग पर, अंबोदिया गांव में श्री सेवाधाम आश्रम के सामने विराजमान है।
84	श्री दुर्दुरेश्वर महादेव	उज्जैन से आगर रोड पर आर.ड.ी गार्डी मेडिकल कॉलेज से आगे, जैथल गांव में अंदर स्थित है।

यह है महाकाल के द्वारपाल

उज्जैन के चार दिशाओं में स्थित चार महादेव, श्री महाकाल के द्वारपाल माने जाते हैं। इनमें पूर्व दिशा में श्री पिंगलेश्वर महादेव, दक्षिण दिशा में श्री कायावरोहणेश्वर महादेव, उत्तर दिशा में श्री बिल्बकेश्वर महादेव और पश्चिम दिशा में श्री दुर्दुरेश्वर महादेव शामिल हैं।

चौरासी महादेव के क्षेत्रवार मंदिरों की संख्या

क्रमांक		किस क्षेत्र में स्थित है चौरासी महादेव में क्रम संख्या	कुल संख्या
01	महाकाल क्षेत्र	5, 7, 72, 80	4
02	हरसिद्धि क्षेत्र	1, 10, 12, 69, 71	5
03	नदी घाट क्षेत्र	2, 3,4,6,13,21,68,70,76	9
04	नदी के पार क्षेत्र	49, 66, 67	3
05	अनंत पेठ (श्मशान क्षेत्र)	8, 26, 33, 35	4
06	ढाबारोड़ (खटिकवाडा)	22, 46, 48, 51, 52, 53, 65	7
07	कार्तिक चौक, सिंहपुरी	14, 56, 57, 62, 77, 78	6
08	मोदी व सुगन्धी गली	15, 16, 17, 18	4
09	नागनाथकी गली, भागसीपुरा	19, 20, 50, 74	4
10	खत्रीवाड़ा क्षेत्र	24, 25, 59, 61	4
11	सराफा, टंकी चौराहा	23, 29, 60	3
12	डाबरीपीठा व नलियाबाखल	9,47	2
13	अंकपात	28, 30, 36, 37, 38, 39, 40	7
14	नयापुरा	45	1
15	पिपलीनाका, गढ़कालिका	54, 55, 69	3
16	भेरूगढ़	11, 34, 41, 73, 75	5
17	मंगलनाथ क्षेत्र	42, 43, 44	3
18	खिलचीपुर, मकोड़िया आम	27, 31, 32	3
19	तिलकेश्वरऋणमुक्तेश्वर	58, 63, 64	3
20	ग्रामीण क्षेत्र	81, 82, 83, 84	4
	सम्पूर्ण योग		**84**

अधिक मास/पुरुषोत्तम मास में सप्तसागरों की परिक्रमा एवं पूजा

सप्त सागर, सात पवित्र सरोवरों का समूह, जिसका आध्यात्मिक महत्व अत्यंत गहरा है। सप्त सागर का वर्णन स्कंद पुराण आदि कई ग्रंथों में मिलता है। अधिक मास के दौरान एक ही दिन में सप्तसागरों की परिक्रमा करने का विशेष धार्मिक महत्व है। अधिक मास हर तीन वर्ष में एक बार आता है इस मास में किए गए दान, स्नान, जप और तीर्थयात्रा को विशेष फलदाई माना जाता है।अधिक मास भगवान विष्णु से संबंधित है, इसलिए इस महीने में किए गए धार्मिक कार्यों का फल कई गुना होकर मिलता है। यहीं कारण है कि अधिक मास में सप्त सागरों की परिक्रमा की जाती है। मान्यता है कि इस यात्रा से पुण्य लाभ, पापों से मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। सप्त सागर की पूजा परिक्रमा के दौरान प्रत्येक सागर में कुछ विशेष वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। मान्यता है कि ऐसा करने से शुभ फल मिलते हैं एवं जीवन के सभी कष्ट भी दूर होते हैं।

सप्त सागर में सात पवित्र जलाशय सम्मिलित हैं -

1. **रुद्र सागर**-रुद्रसागर महाकाल मंदिर के पीछे, महाकाल मंदिर और हरसिद्धि मंदिर के बीच स्थित है। यहां नमक, रूद्राक्ष, सफेद कपड़े और चांदी के नंदीगण की प्रतिमा अर्पित करने का विधान है।
2. **पुष्कर सागर**- यह महाकाल मंदिर से कुछ ही दूरी पर नलिया बाखल क्षेत्र में, रुद्रसागर के उत्तर में स्थित है। यहां पीले वस्त्र, चने की दाल तथा सोने का दान किया जाता है।
3. **क्षीर सागर**- क्षीर सागर कंठाल क्षेत्र में,नई सड़क पर कुण्ड के रूप में स्थित है। यहां साबूदाने की खीर और पात्र दान की परम्परा है।
4. **गोवर्धन सागर**- यह निकास चौराहे के पास स्थित है। इस सागर पर कांसे के पात्र में माखन-मिश्री, गुड़ से भरा पात्र, गेहूं, लाल वस्त्र, पुरुष के वस्त्र दान देने का विशेष महत्व है।
5. **रत्नाकर सागर**- यह सागर उज्जैन शहर से लगभग 4 किमी दूर मक्सी रोड पर ग्राम उंडासा में स्थित है। यहां पंचरत्न, महिलाओं के श्रृंगार की सामग्री और महिलाओं के वस्त्र दान का महत्व माना जाता है।
6. **विष्णु सागर**- यह अंकपात मार्ग पर प्राचीन राम जनार्दन मंदिर के पास स्थित है। यहाँ विष्णु भगवान की प्रतिमा, आसन, माला, गीताजी, शंख, गरूड़घंटी, पंचपात्र, ग्रंथ, तरबाना, आचमनी आदि वस्तुएं दान की जाती हैं।
7. **पुरुषोत्तम सागर**- यह इंदिरा नगर के नजदीक, अंकपात द्वार के समीप, गायत्री शक्ति पीठ के सामने स्थित है। यहां 33 नग मालपुआ को चलनी में रखकर अर्पित करने का महत्व है।

पुरुषोत्तम मास में नौ नारायण की पूजा

नौ नारायण भगवान श्री विष्णु के दशावतारों के विभिन्न स्वरूप हैं। इनकी पूजा और यात्रा मुख्य रूप से पुरुषोत्तम मास के दौरान की जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नौ नारायणों के दर्शन से नवग्रह के दुष्प्रभाव शांत होते हैं। यह पूजा और यात्रा नौ ग्रहों की शांति और मोक्ष के लिए की जाती है। इनकी पंचोपचार पूजा करना चाहिए। पूजा या यात्रा के साथ दान का भी महत्व शास्त्रों में बताया गया है।

उज्जैन के प्रमुख नौ नारायण मंदिर-

1. **श्री पुरुषोत्तमनारायण मंदिर** -करीब 200 वर्ष पुराना पुरुषोत्तमनारायण मंदिर हरसिद्धि मंदिर के समीप स्थित है। यहाँ के दर्शन व पूजा करने से हर प्रकार की मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। पुरुषोत्तमनारायण मंदिर दो स्थानों गोला मंडी, अग्रवाल धर्मशाला के पास और क्षीर सागर में भी स्थित है और सभी अपने वास्तविक एवं प्राचीन पुरुषोत्तमनारायण मंदिर होने का दावा करते हैं।

2. **श्री अनंतनारायण मंदिर** - अनंतपेठ, दानी दरवाजे के पास स्थित अनंतनारायण मंदिर 300 वर्ष से अधिक पुराना है। यहाँ अधिक मास के अलावा हरियाली अमावस्या तथा अनंत चतुर्दशी पर पूजा-पाठ का विशेष महत्व है। इनकी पूजा करने से अनंत सुख मिलता है। अनंतनारायण मंदिर बुधवारिया या पुराने हाट में भी स्थित है और यह वास्तविक अनंतनारायण मंदिर होने का दावा करते हैं।

3. **श्री सत्यनारायण मंदिर**- सत्यनारायण मंदिर ढाबा रोड पर स्थित है। सत्यनारायण के दर्शन करने एवं यहाँ कथा श्रवण करने से सुख समृद्धि की कामना पूर्ण होती है। सत्यनारायण मंदिर शहीद पार्क के पास भी स्थित है और यह वास्तविक सत्यनारायण मंदिर होने का दावा करते हैं।

4. **श्री चतुर्भुजनारायण मंदिर** -चतुर्भुजनारायण मंदिर ढाबा रोड पर स्थित है। इनके दर्शन करने से चारों तरफ ख्याति मिलती है। चतुर्भुजनारायण मंदिर दो स्थानों गोला मंडी और अवंतीपुरा में भी स्थित है और यह अपने वास्तविक एवं प्राचीन चतुर्भुजनारायण मंदिर होने का दावा करते हैं।

5. **श्री आदिनारायण मंदिर**-कंठाल चौराहे के समीप सेंट्रल कोतवाली के समक्ष स्थित आदिनारायण मंदिर में दर्शन या पूजा करने से समस्त दुःखों का नाश होता है।

6. **श्री शेषनारायण मंदिर** -शेषनारायण मंदिर क्षीर सागर परिक्षेत्र में स्थित है। यहाँ भगवान विष्णु शेषनाग पर विश्राम कर रहे हैं। सामने बैठी माता लक्ष्मी उनके चरण दबा रही है।

शेषनारायण मंदिर दो स्थानों हरसिद्धि मंदिर के पास और ढाबा रोड पर जयपुर मूर्ति भंडार के पास में भी स्थित है और यह अपने वास्तविक एवं प्राचीन शेषनारायण मंदिर होने का दावा करते हैं।

7. **श्री पद्मनारायण मंदिर** -पद्मनारायण मंदिर क्षीरसागर पर ही कार्तिक चौक क्षेत्र में है। इस प्राचीन मंदिर में भगवान श्री विष्णु का स्वरूप निराला है। यहाँ की यात्रा करने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है।

8. **श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर**- लक्ष्मीनारायण मंदिर गुदरी चौराहा पर वैश्य समाज की गली में है। कहा जाता है कि यहाँ नियमित दर्शन या आराधना करने वाले व्यक्ति को किसी बात की कमी नहीं रहती है। लक्ष्मीनारायण मंदिर दो स्थानों नई पेठ और उर्दू पुरा में भी स्थित है और यह अपने वास्तविक एवं प्राचीन लक्ष्मीनारायण मंदिर होने का दावा करते हैं।

9. **श्री बद्रीनारायण मंदिर**-बद्रीनारायण मंदिर बक्षी बाजार में है। यह मंदिर भी काफी पुराना है। बद्रीनारायण मंदिर अन्य तीन स्थानों पान दरीबा चौराहा, श्री राम जी की गली और चार धाम मंदिर में भी स्थित है और यह सभी भी अपने वास्तविक एवं प्राचीन बद्रीनारायण मंदिर होने का दावा करते हैं।

पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) में दान

पुरुषोत्तम मास भगवान विष्णु को समर्पित सबसे पवित्र महीना माना जाता है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) में दान का विशेष धार्मिक महत्व है, जिसे भगवान विष्णु की कृपा पाने और पापों के नाश का समय माना जाता है। इस महीने में किए गए दान से अक्षय (कभी न खत्म होने वाला) पुण्य फल मिलता है और यह सामान्य समय की तुलना में दस गुना अधिक फलदायी हो सकता है।

इस महीने में धार्मिक कार्य, व्रत, पूजा और दान करने से भगवान विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।इस मास में दीपदान का बहुत अधिक महत्व है। मंदिर, गौशाला या नदी के किनारे घी/तिल के तेल के दीपक जलाने से दरिद्रता दूर होती है और सभी तीर्थों के समान फल मिलता है। 33 संख्या का इस मास में विशेष महत्व है, इसलिए 33 की संख्या में वस्तुओं का दान शुभ माना जाता है। मान्यता के अनुसार, कांसे के पात्र में 33 मालपुए और पान रखकर ब्राह्मण को दान करने से पृथ्वी दान के समान पुण्य मिलता है।

पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) में तिथि के अनुसार दान

पूरे महीने में तिथि अनुसार वस्तुओं का दान किया जाता है। प्रतिदिन या विशेष तिथियों पर सामर्थ्य अनुसार दान उत्तम माना गया है।

शुक्ल पक्ष का दान	कृष्ण पक्ष का दान
1. घी से भरा चाँदी का दीपक	1. मालपुआ पात्र सहित
2. सोना या कांसे का पात्र	2. खीर भरा हुआ पात्र
3. कच्चा चना	3. दही
4. खारक	4. पुरुष के सूती वस्त्र
5. चना दाल एवं गुड़	5. स्त्री के रेशमी वस्त्र
6. लाल चंदन	6. ऊनी वस्त्र या ऊन की लच्छी
7. पीला मीठा	7. घी
8. कपूर, केवड़े की अगरबत्ती	8. तिल गुड़
9. केशर	9. चावल
10. कस्तूरी (इत्र)	10. गेहूं
11. गोरोचन (अष्टगंध)	11. दूध
12. शंख (ताम्र कलश)	12. दाल चावल की कच्ची खिचड़ी
13. गरुड़ (चांदी की गाय)	13. शक्कर एवं शहद
14. मोती या मोती की माला	14. तांबे का पात्र
15. हीरा या पन्ना का नग	15. चांदी के नन्दी गण

गरीबों और ब्राह्मणों को अन्न, वस्त्र या कोई भी शुभ वस्तु दान करने से परिवार में सुख-समृद्धि बढ़ती है। यदि पूरे महीने दान करने में समर्थ न हों, तो अंतिम 5 दिनों में दान करके भी पूर्ण फल प्राप्त किया जा सकता है।

उज्जैन दर्शन

मृत्युलोक के स्वामी और काल गणना के अधिपति श्री महाकालेश्वर का निवास स्थान भारत का पुनीत आध्यात्मिक तीर्थ उज्जैन को अतीत में अवन्तिका, उज्जयिनी, विशाला, प्रतिकल्पा, कुमुदवती, कुशस्थली, पद्मावती, स्वर्णशृंगा (कनकंशृंगा), अमरावती आदि अनेक नामों से भी जाना जाता है। पुण्य सलिला क्षिप्रा के दाहिने तट पर बसे इस नगर को भारत की मोक्षदायक सप्तपुरियों में एक माना गया है।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका ।

पुरी द्वारावतीश्चैव सप्तैता मोक्षदायिका ।।

भगवान श्री महाकालेश्वर के अतिरिक्त यहाँ प्रसिद्ध सम्राट विक्रमादित्य की इष्ट देवी हरसिद्धि का पुराणों में वर्णित प्राचीन स्थल है। मंगल ग्रह की जन्मभूमि होने का सौभाग्य इस नगर को प्राप्त है। आर्यभट्ट और वराहमिहिर जैसे आचार्य यहाँ हुए हैं। योगीराज भगवान श्रीकृष्ण, श्री बलराम और उनके मित्र सुदामा ने यहीं पर महर्षि सांदीपनि के गुरूकुल में शिक्षा प्राप्त की थी। वामनपुराण के अनुसार महान भक्त प्रहलाद ने क्षिप्रा नदी में स्नान कर श्री विष्णु और श्री महाकालेश्वर के दर्शन किए थे।

सिंहस्थ (कुंभ) महापर्व

पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन के समय चौदह रत्नों के साथ अमृत भी प्राप्त हुआ था। अमृत प्राप्त करने के लिये देव-दानव युद्ध हुआ था। इस दौरान अमृत कुंभ सूर्य से चंद्र, चंद्र से बृहस्पति और इस प्रकार से एक दूसरे के हाथों में जाता रहा। इस समय में अमृत की कुछ बूँदे नासिक, उज्जैन, प्रयाग ओर हरिद्वार में छलक गई। इसलिए घड़ा रखने वाले ग्रहों की गति के आधार पर एक निश्चित समय में प्रत्येक बारह वर्षों बाद उन चारों स्थानों पर कुम्भ महापर्व का आयोजन होता है। जिसे उज्जैन में सिंहस्थ नाम से जाना जाता है।

सिंहस्थ उज्जैन का महान स्नान पर्व है। बारह वर्षों के अंतराल से यह सिंहस्थ पर्व तब मनाया जाता है जब बृहस्पति, सिंह राशि पर स्थित होते है। उज्जैन में मेष राशि में सूर्य और सिंह राशि में गुरु के आने पर यहाँ महाकुंभ मेले का आयोजन किया जाता है।पवित्र क्षिप्रा नदी में पुण्य स्नान की विधियां चैत्र मास की पूर्णिमा से प्रारंभ होकर वैशाख पूर्णिमा के अंतिम स्नान तक भिन्न-भिन्न तिथियों में सम्पन्न होती है।

यह महापर्व पुरातन काल से ही मनाया जाता रहा है। सिंहस्थ आयोजन की एक प्राचीन परम्परा है। इसके आयोजन के संबंध में अनेक कथाएँ प्रचलित है। मराठा शासन काल में दीवान श्री रामचंद्र बाबा शेणवी ने सिंहस्थ आयोजन की शासकीय व्यवस्था प्रारंभ की थी। तब से यह परम्परा निरंतर चल रही है।

उज्जैन के दर्शनीय स्थान

आप अपनी धार्मिक आस्था, समय की उपलब्धता के अनुसार उज्जैन के इन सभी या कुछ चयनित धार्मिक स्थलों की यात्रा कर सकते हैं। यदि आप सभी स्थलों की यात्रा करना चाहते हैं तो यह स्थान क्रमानुसार दिए गए हैं। आप महाकालेश्वर महालोक से यात्रा का प्रारंभ कर श्री शनि नवग्रह मंदिर पर यात्रा का समापन कर सकते हैं।

1 श्री महाकालेश्वर मंदिर एवं श्री महाकाल महालोक
2 श्री बड़े गणेश मंदिर
3 श्री चार धाम मंदिर
4 श्री हरसिद्धि मंदिर
5 श्री शिप्रा नदी एवं रामघाट
6 श्री चौबीस खंबा माता मंदिर
7 श्री गोपाल मंदिर
8 श्री गेबी हनुमान मंदिर
9 श्री महर्षि सांदीपनि आश्रम
10 श्री मंगलनाथ मंदिर
11 श्री सिद्धवट
12 कालियादेह पैलेस
13 श्री कालभैरव मंदिर
14 श्री गढ़कालिका मंदिर
15 श्री नगरकोट की रानी मंदिर
16 श्री भर्तृहरि गुफा
17 श्री ऋणमुक्तेश्वर महादेव
18 श्री राम-जनार्दन मंदिर
19 श्री यंत्रमहल, वेध शाला
20 श्री चिंतामन गणेश मंदिर
21 श्री अष्टविनायक मंदिर
22 श्री इस्कॉन मंदिर
23 श्री प्रशांति धाम
24 श्री नवग्रह शनि मंदिर

श्री महाकालेश्वर मंदिर एवं श्री महाकाल महालोक

आकाशे तारकं लिंग, पाताले हाटकेश्वरम्।
भू लोके च महाकालौ: लिंगत्रय: नमोस्तुते।।

ब्रह्माण्ड में तीन लिंग पूज्य हैं, इनमें आकाश में तारकेश्वर, पाताल में हाटकेश्वर और भू-लोक में महाकालेश्वर प्रधान है। महाकालेश्वर कालचक्र के प्रवर्तक हैं। इनके दर्शन से अकाल मृत्यु से रक्षा होती है।

महाकालेश्वर महादेव भारत के प्रमुख बारह ज्योतिर्लिंगों में है। महाकाल उज्जैन के अधिपति आदिदेव माने जाते हैं। मंदिर परिसर में स्थित कोटि तीर्थ की विशेष मान्यता है।

महाकालेश्वर की प्रतिमा दक्षिणमुखी है। महाकालेश्वर मंदिर के ऊपरी भाग में ओंकारेश्वर शिव की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इसी तरह ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर की ऊपरी पीठ पर महाकाल मूर्ति विराजमान हैं। महाकालेश्वर मंदिर के तृतीय खण्ड में नागचंद्रेश्वर की प्रतिमा स्थापित है। नागचंद्रेश्वर की प्रतिमा के दर्शन केवल नागपंचमी को होते हैं।

महाकालेश्वर मंदिर में प्रतिदिन लगभग प्रातः 4:00 बजे भस्म आरती होती है जो विश्व प्रसिद्ध और दर्शनीय है। इतिहास के प्रत्येक युग में इस मंदिर का निरंतर जीर्णोद्धार होता रहा है। वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण राणोजी सिंधिया के काल में मालवा के सूबेदार रामचंद्र बाबा शेणवी द्वारा कराया गया था। वर्तमान में यह मंदिर महाकाल मंदिर समिति के तत्वावधान में संरक्षित है। शासन एवं महाकाल मंदिर समिति के प्रयासों से मंदिर का आधुनिक स्वरूप दर्शनीय है। महाकालेश्वर मंदिर समिति द्वारा हाईटेक अन्नक्षेत्र का संचालन किया जाता है। यहां लगभग 2000 श्रद्धालु एक बार में एक साथ बैठकर महाप्रसादी ग्रहण कर सकते हैं।

श्री महाकाल महालोक का भव्य उद्घाटन 11 अक्टूबर, 2022 को प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया था। यह महाकालेश्वर मंदिर परिसर का विस्तार है।

यहाँ 108 से अधिक स्तंभ (म्यूरलस्टैच्यू) हैं जो शिवपुराण की कहानियों को दर्शाते हैं। इसमें कमल सरोवर, रुद्रसागर और कई कलाकृतियां शामिल हैं, जो भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करती हैं। इस परियोजना का लक्ष्य 'महाकाल-द मास्टर ऑफ टाइम' की थीम पर शिव की कथाओं को आधुनिक तरीके से प्रस्तुत करना है, जिसमें कमल सरोवर, रुद्रसागर और 100 से अधिक म्युरल और प्रतिमाएं शामिल हैं।

श्री महाकाल महालोक, उज्जैन में दो भव्य और मुख्य प्रवेश द्वार हैं- नंदी द्वार और पिनाकी द्वार। नंदी द्वार भगवान शिव के वाहन नंदी को समर्पित है, जबकि पिनाकी द्वार शिव के धनुष 'पिनाक' के नाम पर है। ये प्रवेश द्वार नक्काशीदार हैं और महाकाल लोक गलियारे की शुरुआत करते हैं।

मुख्य नन्दी द्वार त्रिवेणी संग्रहालय के पीछे रूद्रसागर के किनारे स्थित है। यह द्वार विशाल नन्दी की 26 फीट ऊंची प्रतिमा से सुसज्जित है। लाल पत्थर से निर्मित इस द्वार के आगे 920 मीटर लम्बा महाकाल पथ है। द्वार के एक ओर 25 फीट उंची और 500 मीटर लम्बी लाल पत्थर की दिवार है, जो पौराणिक कथाओं के सुन्दर शिल्प से सुसज्जित है। भगवान शिव की कथाओं पर आधारित 190 मूर्तियाँ परिसर में लगी है। कमल सरोवर के मध्य में आदियोगी शिव की मूर्ति स्थापित है।

यहां विग्रह स्वरूप में सप्तऋषियों की मूर्ति, नवग्रहों की मूर्तियाँ, 25 फीट ऊँचा शिव स्तम्भ, भगवान शिव द्वारा त्रिपुरासुर के संहार को दर्शाती 70 फीट ऊँची मूर्ति, भगवान गणेश, कार्तिकेय, माता पार्वती आदि की मूर्तियाँ स्थापित है।

अहिल्याबाई मार्ग की ओर के प्रवेश द्वार के आगे पहुँच मार्ग पर 24 दुर्लभ शैल चित्रों के द्वारा उज्जैन की गौरव गाथा 20 फीट ऊँची तथा 225 मीटर लम्बी दीवार पर दशाई गई है। परिसर में भगवान शिव को प्रिय फल-फूल, लता पत्रों के 52000 पौधों रोपे गए है। पास में स्थित त्रिवेणी संग्रहालय में 18 पुराणों कथाओं पर आधारित लगभग 3000 चित्र प्रदर्शित हैं।

महाकाल लोक का विशेष आकर्षण श्री डी इफेक्ट के साथ स्क्रीन पर भगवान महाकाल के प्राकट्य और उज्जैन की गौरव गाथा देखने सुनने का अवसर प्रारंभ होने वाला है। वर्तमान में श्री महाकाल महालोक श्री महाकालेश्वर मंदिर का प्रवेश द्वार है।

श्री बड़े गणेश मंदिर

श्री महाकालेश्वर मंदिर के निकट हरसिद्धि मार्ग पर गणेश जी की भव्य और कलापूर्ण विशाल मूर्ति प्रतिष्ठित है। इसी कारण से इसे बड़ा गणेश के नाम से जानते हैं। इस मूर्ति का निर्माण महर्षि सांदीपनि के वंशज पद्मविभूषण पं. सूर्यनारायण व्यास के पिता स्व. पं. नारायण जी व्यास ने किया था। गणेश जी की मूर्ति संरचना में पवित्र सात नदियों के जल एवं सप्त पूरियों की मिट्टी को प्रयोग में लाया गया था। मंदिर परिसर में सप्तधातु की पंचमुखी हनुमान प्रतिमा है जो पृथ्वी, कूर्मनाग और उस पर कमल की विकसित नाभि पर प्रतिष्ठित है। इसके साथ खगोल कक्षा क्रम के अनुसार नवग्रह मंदिर तथा कृष्ण यशोदा आदि की प्रतिमाएं भी विराजित हैं।

श्री चार धाम मंदिर

चार धाम मंदिर, महाकालेश्वर मंदिर के पास, हरसिद्धि देवी मंदिर की दक्षिण दिशा में थोड़ी सी दूरी पर एक भव्य आध्यात्मिक स्थल है। यहां भारत के चारों मुख्य धाम बद्रीनाथ, द्वारका, पुरी और रामेश्वरम की एक ही स्थान पर प्रतिकृति है। यहाँ 12 ज्योतिर्लिंगों के साथ भगवान विष्णु, शिव और राम के सुंदर मंदिर हैं। यह मंदिर शांति और स्थापत्य कला के लिए जाना जाता है।

स्वामी शांति स्वरूपानंद जी तथा युगपुरुष श्री परमानंद जी महाराज के प्रयासों से चार धाम मंदिर में सन् 1997 में श्री द्वारका धाम तथा जगन्नाथ धाम की सन् 1999 में रामेश्वर धाम की एवं सन् 2000 में श्री बद्री विशाल की प्राण प्रतिष्ठा हुई। यह एक अपेक्षाकृत नया मंदिर है, जिसका निर्माण 2010 में प्रारंभ होकर 2013 में पूरा हुआ।

श्री हरसिद्धि देवी मंदिर

यह मंदिर बड़े गणेश मंदिर से थोड़ी दूर और रूद्रसागर तालाब के किनारे स्थित है। हरसिद्धि देवी माता मंदिर महाकालेश्वर मंदिर के समीप स्थित प्राचीन और प्रमुख 51 शक्तिपीठों में से 13वां शक्तिपीठ माना जाता है। मान्यता के अनुसार, दक्ष यज्ञ विध्वंस के बाद सती की कोहनी यहाँ गिरी थी। स्कन्दपुराण में वर्णन है कि शिवजी के कहने से देवी ने दुष्ट दानवों का वध किया। इससे उनका नाम हरसिद्धि हुआ। हरसिद्धि माता को मंगल चंडिका के रूप में भी जाना जाता है और इन्हें उन्नति व समृद्धि की देवी माना जाता है। यह स्थान तांत्रिक साधनाओं के लिए भी प्रसिद्ध रहा है।

मंदिर के गर्भ गृह में श्री यंत्र प्रतिष्ठित है। ऊपर श्री अन्नपूर्णा तथा उनके आसन के नीचे कालिका, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती आदि की प्रतिमाएँ हैं। हरसिध्दि देवी वैष्णव संप्रदाय की आराध्य रही है। यह मंदिर अपने दो 51 फीट ऊंचे दीप स्तंभों के लिए प्रसिद्ध है, जिन पर प्रतिदिन 1051 दीपक जलते हैं। यह दृश्य शाम की आरती के समय अद्भुत होता है।

हरसिद्धि देवी राजा विक्रमादित्य की आराध्य देवी हैं। कहते हैं कि विक्रमादित्य ने यहाँ तपस्या कर उनका दर्शन किया था, तथा ग्यारह बार अपना सिर काटकर इन्हें अर्पित कर दिया था और ग्यारहों बार सिर पुनः उनके शरीर से जुड़ गया था।

हरसिद्धि देवी के मंदिर से कुछ दूरी पर ही पाटीदार समाज का श्रीराम मंदिर स्थित है इसमें श्री राम दरबार के साथ अन्य देवी देवताओं की प्रतिमाएं भी स्थापित है। इस मंदिर के पास ही रामानुजकोट एवं सिरवी समाज द्वारा निर्मित योग माया मंदिर भी है।

श्री शिप्रा नदी एवं रामघाट

श्री हरसिद्धि मंदिर के पीछे कुछ ही दूरी पर शिप्रा नदी पर रामघाट है। रामघाट शिप्रा नदी के तट पर स्थित सबसे प्राचीन और पवित्र घाटों में से एक है।

तस्माद्याशगुणा क्षिप्रा पवित्रा पापनाशिनी,
ईदृशां च नदी रम्या अवन्त्यां भुवि वर्तते।

इस प्रकार क्षिप्रा गंगा से भी अधिक पवित्र और पुण्य-प्रदायिणी है। मन, वचन और कर्म- तीनों द्वारा किये गये पापों का नाश करने की शक्ति क्षिप्रा-जल में विद्यमान है।

शिप्रा (क्षिप्रा) नदी मध्य प्रदेश की एक प्रमुख पवित्र नदी है, जिसे 'मालवा की गंगा' भी कहा जाता है। शिप्रा मुख्य रूप से अपनी सांस्कृतिक और पौराणिक महत्ता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हर 12 साल में प्रसिद्ध सिंहस्थ कुंभ मेला रामघाट के किनारे आयोजित होता है। उज्जैन नगर पवित्र शिप्रा नदी के पूर्वी भाग पर बसा हुआ है। स्कन्द पुराण में कहा गया है कि सारे भूमण्डल पर शिप्रा के तट पर क्षण भर खड़े रहने मात्र से मुक्ति मिल जाती है।

मान्यता अनुसार, त्रेतायुग में भगवान राम ने यहाँ अपने पिता राजा दशरथ का पिंडदान किया था। रामघाट भगवान राम के पद स्पर्श से पावन माना जाता है। रामघाट पर श्रद्धालु स्नान करते हैं और पितरों की मुक्ति के लिए पूजा-पाठ करते हैं। शिप्रा महासभा द्वारा नित्य गोधूली बेला में श्री रामघाट पर प्रतिदिन शिप्रा जी की संध्या आरती का दृश्य अद्भुत होता है।

श्री चौबीस खंबा माता मंदिर

चौबीस खंबा माता मंदिर गुदरी चौराहे के पास एक प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर है, जो 9वीं-10वीं शताब्दी का माना जाता है। यह मंदिर 1400 वर्ष से अधिक पुराना है। यह 24 नक्काशीदार खंभों पर टिका है जो प्राचीन काल में किसी बड़े द्वार का हिस्सा माने जाते थे। यहाँ महामाया और महालाया माता की दो मुख्य प्रतिमाएं हैं।

माना जाता है कि उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने मूल मंदिर का निर्माण कराया था। बाद

में परमार राजाओं ने इसका जीर्णोद्धार कराया। इस मंदिर की वास्तुकला गुप्त स्थापत्य शैली का एक उदाहरण है। खंभों पर पौराणिक दृश्य, देवता और पुष्प आकृतियां उकेरी गई हैं। प्रवेश द्वार पर सिंहों की दो मूर्तियां हैं, जो शक्ति और वीरता का प्रतीक हैं।

यहां नगर पूजा की परम्परा मदिरा से जुड़ी है। शारदीय नवरात्रि की अष्टमी के दिन कलेक्टर, माता को मदिरा का भोग लगाते हैं। अष्टमी के दिन सुबह 8 बजे पूजा शुरू होती है। आरती के बाद 5 ढोल से पूरे शहर के 40 देवी, भैरव और हनुमान मंदिरों में पूजन किया जाता है। 40 मंदिरों (27 किमी) तक मदिरा की धार बहाई जाती है एवं बाल बाकल का भोग लगाया जाता है। यह परंपरा राजा विक्रमादित्य के समय से जुड़ी है। ऐसा महामारी-आपदा से बचाव और समृद्धि के लिए किया जाता है। इसका समापन रात 8 बजे हांडी फोड़ भैरव मंदिर में होता है। माता को सोलह श्रृंगार सामग्री, चुनरी चढ़ाई जाती है।

श्री गोपाल मंदिर

गोपाल मंदिर का निर्माण महाराजा दौलतराव सिंधिया की महारानी बायजा बाई ने वर्ष 1833 के आसपास कराया था। नगर के मध्य स्थित इस मंदिर में श्री द्वारिकाधीश की प्रतिमा है, अतः इसे श्री द्वारिकाधीश श्री गोपाल मंदिर भी कहते हैं।

यह भव्य मंदिर मराठा और राजपूत वास्तुकला का मिश्रण है। यह मंदिर भगवान कृष्ण को समर्पित है, जिसमें चांदी के दरवाजे और 2 फुट ऊंची संगमरमर की मूर्ति मुख्य आकर्षण हैं। मंदिर के गर्भगृह में भगवान कृष्ण (द्वारकाधीश) की मूर्ति की स्थापना 1852 में हुई। 'द्वारकाधीश गोपाल मंदिर' में भगवान द्वारकाधीश, शंकर, पार्वती और गरुड़ भगवान की मूर्तियाँ हैं। ये मूर्तियाँ अचल है और एक कोने में वायजा बाई की भी मूर्ति है।

जन्माष्टमी यहाँ का विशेष पर्व है। बैकुण्ठ चौदस के दिन श्री महाकालेश्वर की सवारी हरिहर मिलन हेतु मध्य रात्रि में यहाँ आती है तथा भस्म पूजन के समय श्री गोपालकृष्ण की सवारी महाकालेश्वर जाती है और वहाँ तुलसी-दल अर्पित किया जाता है। मंदिर की देखभाल सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट द्वारा की जाती है।

श्री गेबी हनुमान मंदिर

श्री गैबी हनुमान का मंदिर ढाबा रोड़ पर स्थित है। यहाँ पर आशुतोष श्री हनुमानजी की प्राचीन व विलक्षण प्रतिमा है। दैत्य संहार कर हर्ष से हुंकार करते हुए श्री गैबी हनुमान के दर्शन

मात्र से भक्तों को आनंद की अनुभूति होती है।

मंदिर के पुजारी ने बताया की कई साल पहले यहां के स्थानीय निवासी को गेबी हनुमान ने सपने में दर्शन दिया था। उन्होंने उनकी प्रतिमा को बावडी से बाहर निकालने को कहा था। इसके बाद बावड़ी से बाहर निकाल कर इस मंदिर में विराजित कर दिया गया। हनुमान जी को जब बाहर निकाला गया था तब उनका स्वरूप लाल था। गेबी हनुमान के पैरों के नीचे अहिरावण की कुलदेवी की प्रतिमा है।

इस मंदिर में हनुमानजी का श्रृंगार अन्य मंदिरों की तुलना में कुछ अलग है। यह देश में पहला स्थान है, जहां हनुमानजी का श्रृंगार हिंगलू और चमेली के तेल से होता है। यहां गुड़-चना चढ़ाने से भगवान प्रसन्न हो जाते हैं।

श्री महर्षि सांदीपनि आश्रम

प्राचीन उज्जैन अपने राजनीतिक और धार्मिक महत्व के अलावा, महाभारत काल की शुरुआत में शिक्षा का प्रतिष्ठित केंद्र था। इस आश्रम का उल्लेख महाभारत और अन्य पुराणों में भी मिलता है।

सांदीपनी आश्रम मंगलनाथरोड़ पर, शिप्रा नदी के तट पर स्थित एक अत्यंत प्राचीन और पवित्र स्थल है। भगवान श्री कृष्ण ने 11 वर्ष की आयु में अपने भाई बलराम और मित्र सुदामा के साथ यहां शिक्षा ग्रहण की थी। श्रीकृष्ण और बलराम ने कंस वध के बाद आश्रम में शिक्षा प्राप्त की थी। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यहाँ श्रीकृष्ण ने केवल 64 दिनों में वेद, उपनिषद, धनुर्विद्या और युद्धकला सहित 64 विद्याओं और 16 कलाओं का ज्ञान अर्जित किया था।

महर्षि संदीपनी पौराणिक काल के एक परम तेजस्वी ऋषि और भगवान श्रीकृष्ण, बलराम व सुदामा के गुरु थे। शिक्षा पूर्ण होने पर संदीपन ऋषि की पत्नी ने गुरुदक्षिणा में प्रभास क्षेत्र (समुद्र) में डूबे अपने पुत्र की वापसी की मांग की। कृष्ण और बलराम ने यमलोक जाकर पंचजन (शंखासुर) नामक असुर का वध करके अपने गुरु के पुत्र को वापस लाएं।

यहाँ गोमती कुंड के संबंध में किंवदंती है कि श्रीकृष्ण ने आश्रम में गुरु सांदीपनि को जल की सुविधा के लिए सभी पवित्र नदियों का जल इस कुंड में एकत्र किया था। आश्रम में प्राचीन पत्थर है जिस पर 1 से 100 तक की संख्याएँ अंकित हैं, माना जाता है कि इसे गुरु सांदीपनि ने स्वयं लिखा था। इस आश्रम को कृष्ण-सुदामा की मित्रता और शिक्षा की स्थली के रूप में जाना जाता है। आश्रम में एक मंदिर है जहाँ कृष्ण, बलराम और सुदामा की मूर्तियाँ स्थित हैं।

श्री मंगलनाथ मंदिर

मंगलनाथ मंदिर क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। मत्स्य पुराण के अनुसार, मंगल ग्रह पृथ्वी का पुत्र है। दूसरे शब्दों में, मंगल एक ऐसा ग्रह है जिसकी उत्पत्ति पृथ्वी से ही हुई है। मंगलनाथ मंदिर महादेव को समर्पित है, क्योंकि पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव और अंधकासुर के बीच हुए युद्ध के समय शिव के शरीर से पसीने की एक बूंद शिप्रा नदी के पास गिरी थी, जिससे लाल रंग का एक बालक उत्पन्न हुआ, जिसका नाम 'मंगल' रखा गया। इसके बाद, जिस स्थान पर पसीने की वह बूंद गिरी थी, वहाँ एक मंदिर का निर्माण किया गया, जिसे 'मंगल नाथ मंदिर' नाम दिया गया।

यहां मंगल दोष निवारण के लिए 'भात पूजा' प्रसिद्ध है। ऐसे व्यक्ति जिनकी कुंडली में मंगल भारी रहता है, वे अपने अनिष्ट ग्रहों की शांति के लिए यहाँ पूजा-पाठ करवाने आते हैं। कर्क रेखा पर स्थित यह प्राचीन शिव मंदिर (भगवान मंगलनाथ) वैवाहिक जीवन में सुख-शांति और मांगलिक दोष शांति के लिए विश्व प्रसिद्ध है। जिन जातकों की कुंडली मांगलिक होती है। उन्हें विवाह से पूर्व विशेष 'मंगल दोष निवारण पूजा' करवाने की सलाह दी जाती है। मंगल भात पूजा में, आशीर्वाद पाने के लिए भगवान शिव (मंगलनाथ के रूप में) को पके हुए चावल, दही और दूध अर्पित किए जाते हैं।

ज्योतिष शास्त्र में, मंगल ग्रह को शक्ति, बल, साहस और आक्रामकता का प्रतीक माना जाता है। इसे एक उग्र ग्रह के रूप में देखा जाता है और इसका संबंध लाल रंग से है। यहाँ भक्त लाल वस्त्र, मसूर की दाल, मूंगा, गेहूं और लाल वस्तुओं का दान करते हैं।

मंगलनाथ मंदिर में दो मुख्य पूजाओं मंगल भात पूजा एवं मंगल ग्रह शांति जाप के अतिरिक्त भक्त इस मंदिर में 'नवग्रह शांति पूजा' और 'रुद्राभिषेक' भी करते हैं। मंगलनाथ मंदिर के पास ही भुवनश्वरी माता और अन्य देवी-देवताओं के मंदिर भी हैं।

श्री सिद्धवट

सिद्धवट घाट भैरवगढ़ के पास, क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित एक अत्यंत प्राचीन और पवित्र स्थल है। यहाँ माता पार्वती द्वारा लगाया गया एक पवित्र बरगद का पेड़ है, जिसे सिद्धवट कहा जाता है। यह स्थान पिंडदान, तर्पण, और कालसर्प दोष पूजा जैसे पितृ अनुष्ठानों के लिए प्रसिद्ध है। हिंदू पुराणों के अनुसार इस दुनिया में चार महत्वपूर्ण बरगद के वृक्ष हैं। इनमें उज्जैन में

सिद्धवट, प्रयाग में अक्षयवट, गया में बौद्धवट और मथुरा-वृंदावन में वंशीवट सम्मिलित है।

यहाँ तीन तरह की सिद्धि होती है संतति, संपत्ति और सद्गति। सद्गति अर्थात पितरों के लिए अनुष्ठान किया जाता है। संपत्ति अर्थात लक्ष्मी कार्य के लिए वृक्ष पर रक्षा सूत्र बाँधा जाता है और संतति अर्थात पुत्र की प्राप्ति के लिए उल्टा सातिया (स्वस्तिक) बनाया जाता है। तीनों की प्राप्ति के लिए यहाँ पूजन किया जाता है। मान्यता है कि भगवान श्री राम ने भी यहाँ अपने पिता राजा दशरथ का श्राद्ध किया था।

कालियादेह पैलेस

उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर स्थित कालियादेह महल का निर्माण 1458 ईस्वी में मांडू के सुल्तान महमूद नासिरुद्दीन खिलजी ने करवाया था। यह पैलेस अपनी फारसी वास्तुकला, 52 कुंडों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। पिंडारी आक्रमण में नष्ट होने के बाद, इसका पुनर्निर्माण 1920 में माधवराव सिंधिया द्वारा करवाया गया था। यह शिप्रा नदी के बीच एक द्वीप के रूप में स्थित है, जिसके दोनों ओर नदी का पानी बहता है।

किंवदंती के अनुसार, यहाँ प्राचीन काल में सूर्य कुंड और ब्रह्म कुंड नामक दो जलकुंडों के साथ एक प्राचीन सूर्य मंदिर स्थित था। फारसी शिलालेखों के अनुसार, बादशाह अकबर और जहांगीर ने इस महल का दौरा किया था। 'कालियादेह महल' अब खंडहरों में बदल गया है।

श्री कालभैरव मंदिर

पुराणों में वर्णित अष्ट भैरव में काल भैरव का स्थल है। काल भैरव मंदिर शिव के उपासकों के कापालिक सम्प्रदाय से संबंधित है। क्षिप्रा नदी के तट पर काल भैरव मंदिर स्थित है। मंदिर के अंदर काल भैरव की विशाल प्रतिमा है। यह मंदिर सदियों पुराना है और माना जाता है कि भगवान शिव के रुद्र अवतार के रूप में भैरव की उत्पत्ति हुई थी। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण प्राचीन काल में राजा भद्रसेन ने कराया था।

स्कंद पुराण के अवंति खंड में काल भैरव मंदिर का उल्लेख है। काल भैरव की पूजा कपालिका और अघोरा संप्रदाय का हिस्सा रही है। काल भैरव मंदिर एक अत्यंत प्राचीन (लगभग 6000 वर्ष पुराना) और रहस्यमयी मंदिर है, जहाँ भगवान शिव के उग्र रूप भैरव को मदिरा का भोग लगाया जाता है। तांत्रिक साधनाओं के लिए यह प्रसिद्ध है। यहाँ भगवान को मदिरा अर्पित करना दोषमुक्ति और सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है।

काल भैरव को मदिरा (शराब) का भोग उनकी तामसिक प्रवृत्ति और भगवान शिव के उग्र रूप को शांत करने के लिए लगाया जाता है। यह परंपरा प्रतीक है कि भक्त अपनी आंतरिक बुराइयों, अहंकार और कमजोरियों को भगवान के चरणों में समर्पित कर उन्हें नष्ट करने की प्रार्थना करते हैं। भक्त शराब के रूप में अपनी बुरी आदतों को भगवान को अर्पित करते हैं ताकि वे उनसे मुक्त हो सकें।

काल भैरव मंदिर के सबसे बड़े रहस्यों में से एक यह है कि भगवान काल भैरव साक्षात् मदिरा (शराब) का भोग स्वीकार करते हैं। यहाँ पुजारी जैसे ही मदिरा का कटोरा प्रतिमा के मुख के पास लाते हैं, वह तरल कुछ ही सेकंड में गायब हो जाता है। आज तक अनसुलझी घटना है कि कोई भी वैज्ञानिक या शोधकर्ता यह पता नहीं लगा पाया है कि शराब कहाँ जाती है।

मदिरा प्रसाद के अतिरिक्त भक्त भैरव बाबा को प्रसन्न करने के लिए तंबाकू, फूल, काले तिल और इमरती भी चढ़ाते हैं। काल भैरव को महाकाल का कोतवाल माना जाता है, जिनके दर्शन के बिना महाकाल की यात्रा अधूरी मानी जाती है।

श्री गढ़कालिका मंदिर

गढ़कालिका मंदिर 51 शक्तिपीठों में सम्मिलित एक प्राचीन और चमत्कारी शक्तिपीठ है। यह भैरवगढ़ क्षेत्र में स्थित है। किंवदंती के अनुसार, जब भगवान शिव अपनी पत्नी देवी सती का मृत शरीर लेकर जा रहे थे, तब उनका ऊपरी होंठ महाकाली मंदिर वाली जगह पर गिरा था।

यह एक जाग्रत शक्तिपीठ है, जहाँ देवी काली की सौम्य प्रतिमा स्थापित है। देवी कालिका के इस चमत्कारिक मंदिर की प्राचीनता के विषय में माना जाता है कि इसकी स्थापना महाभारतकाल में हुई थी, लेकिन मूर्ति सतयुग के काल की है। 7वीं सदी में सम्राट हर्षवर्धन ने पुनर्निर्मित करवाया था। यह पंवार वंश की कुलदेवी का स्थान भी माना जाता है। बाद में इस प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार गुर्जर सम्राट नागभट्ट द्वारा किए जाने का उल्लेख मिलता है। स्टेटकाल में ग्वालियर के महाराजा ने इसका पुनर्निर्माण कराया।

यह मंदिर तांत्रिक साधना और महाकवि कालिदास की ज्ञान स्थली के रूप में प्रसिद्ध है। किंवदंती के अनुसार कालिदास ने अपने जीवन की शुरुआत एक अनपढ़ गड़रिये के रूप में की थी। उन्होंने देवी काली की पूरी श्रद्धा से पूजा-अर्चना करके ज्ञान और काव्य-प्रतिभा का वरदान माँगा। देवी ने उन्हें अपना आशीर्वाद दिया जिससे वे भारतीय इतिहास के महानतम

कवियों और विद्वानों में से एक बन गए। मंदिर के पास ही तांत्रिक साधना के लिए विख्यात भर्तृहरि गुफाएँ स्थित हैं।

श्री नगरकोट की मातारानी मंदिर

माँ नगरकोट माता मंदिर गोवर्धन सागर के समीप स्थित एक प्राचीन और जागृत देवी मंदिर है, जिन्हें अवंतिका नगरी की रक्षक देवी माना जाता है। स्थानीय मान्यता है कि बाबा महाकाल के राजा बनने से पहले से नगर कोट माता उज्जैन की सीमा पर तैनात उज्जैनवासियों की रक्षा कर रही हैं। यहां नगर मतलब शहर और कोट मतलब परिधि है, मतलब सीमा की रक्षा करने वाली माता।

यह मंदिर परमारकालीन माना जाता है और इसका वर्णन स्कंद पुराण के अवंतिका खंड में मिलता है।मंदिर का इतिहास सम्राट विक्रमादित्य के समय से पुराना है क्योंकि यह उनकी कुलदेवी भी हैं। माना जाता है कि युद्ध से पहले सम्राट विक्रमादित्य नगरकोट माता का आशीर्वाद लेने जरूर आते थे। उन्हीं के काल में मंदिर का निर्माण बड़े पैमाने पर किया गया था। मंदिर में माता नगरकोट की रक्षा के लिए भैरव और भगवान विष्णु की प्रतिमा भी स्थापित है।

श्री भर्तृहरि गुफा

भर्तृहरि गुफाएँ शिप्रा नदी के तट पर, गढ़कालिका मंदिर एवं ऋणमुक्तेश्वर मंदिर के पास स्थित एक प्राचीन, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक स्थल है। यह एक प्राचीन और रहस्यमयी ऐतिहासिक स्थल हैं। भर्तृहरि की गुफा ग्यारहवीं सदी के एक मंदिर का अवशेष है, जिसका समय समय पर जीर्णोद्धार होता रहा।

किंवदंती है कि राजा विक्रमादित्य के भाई और प्रसिद्ध कवि भर्तृहरि ने रानी पिंगला की मृत्यु के बाद सांसारिक सुखों का त्याग कर एवं नाथ पंथ की दीक्षा लेकर यहाँ 12 वर्षों तक वैराग्य धारण कर साधना की थी। पिंगला, पद्माक्षी आदि उनकी पत्नी थीं। पिंगला पर अधिक प्रेम था। उसकी अकाल मृत्यु से भर्तृहरि को अत्यंत वैराग्य उत्पन्न हो गया था।

यह स्थान नाथ संप्रदाय के साधुओं का एक प्रमुख मठ और पवित्र तीर्थस्थल है। सिंहस्थ के दौरान यहाँ नाथ संप्रदाय के संतों का जमावड़ा लगता है। यह प्राचीन शैल-कर्तित वास्तुकला का उदाहरण है, जिसके अंदर जाने का मार्ग बहुत संकरा है। गुफा के अंदर एक

छोटा मंदिर है।

यहाँ मुख्य रूप से दो गुफाएं हैं - एक राजा भर्तृहरि की तपस्या स्थली और दूसरी गोपीचंद महाराज की गुफा। गुफा के अंदर नाथ समुदाय का मंदिर, गोरखनाथ का धुना (अखंड अग्नि) और भर्तृहरि की समाधि स्थित है।

श्री ऋणमुक्तेश्वर महादेव

ऋणमुक्तेश्वर महादेव मंदिर एक प्राचीन और प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है, जहाँ दर्शन और 'पीली पूजा' (चने की दाल, हल्दी) से आर्थिक ऋण व मानसिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। मान्यता है कि सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र ने यहाँ महाकाल के इस रूप की पूजा कर, ऋषि विश्वामित्र को गेंडे के वजन बराबर सोना दान करने का ऋण चुकाया था। यह मंदिर क्षिप्रा नदी के तट पर रामघाट के समीप स्थित है।

यह मंदिर भक्तों को सभी प्रकार के कर्ज, आर्थिक और मानसिक परेशानियों से मुक्ति दिलाने के लिए प्रसिद्ध है। इसके लिए भक्त विशेष रूप से शनिवार और मंगलवार को पीले वस्त्र में चने की दाल, हल्दी की गांठ, गुड़ और पीले फूल महादेव को अर्पित करते हैं। इस मंदिर में पूजा करने से जीवन में समृद्धि, सुख और ऋण मुक्ति मिलती है।

श्री राम-जनार्दन मंदिर

राम जनार्दन मंदिर अंकपात क्षेत्र में, विष्णु सागर तालाब के तट पर स्थित 17वीं शताब्दी में राजा जयसिंह द्वारा निर्मित ऐतिहासिक मंदिर समूह है। मंदिर में अठारहवीं शताब्दी में मराठा काल में बाद में चार-दीवारी और टैंक को जोड़ा गया था।

राम जनार्दन मंदिर परिसर में नागर शैली में निर्मित पूर्व मुखी दो मंदिर स्थापित हैं। प्रथम मंदिर भगवान विष्णु का है जिसमें शेषशायी विष्णु विराजित है और दूसरा मंदिर भगवान श्रीराम का है। यहां श्री राम, लक्ष्मण और जानकी जी की प्रतिमाएं वनवासी वेशभूषा में उपस्थित हैं। मूर्तियों में भगवान राम को दाढ़ी और मूंछ के साथ दर्शाया गया है, जबकि माता सीता के एक हाथ में पौधों को पानी देने के लिए पानी का पात्र और दूसरे हाथ में चवर (पंखे) हैं। राम जनार्दन मंदिर में भगवान राम की काले पत्थर की प्रतिमा स्थापित है।

मंदिर में मूर्ति के आसपास और उत्तर व दक्षिण की दीवारों पर मालवा मराठा शैली में चित्रण देखने को मिलता है। इस मंदिर का गर्भगृह मालवा-मराठा शैली के अद्भुत चित्रों से चित्रित हैं। इस मंदिर की उत्तरी व दक्षिणी दीवार पर चित्र हैं। चटक लाल रंग की पृष्ठभूमि पर बने, इन चित्रों में से दक्षिणी दीवार के चित्र भगवान श्री राम के जन्मोत्सव संबंधी हैं और उत्तरी भित्ती के चित्र श्री राम जानकी के विवाह समारोह पर आधारित है। गोवर्धनधारी कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु और शिव की प्रभावशाली मूर्तियां उनकी स्थापत्य शैली और कलात्मक उत्कृष्टता की भव्यता को दर्शाती हैं।

श्री यंत्रमहल, वेध शाला

अपनी आध्यात्मिक और ऐतिहासिक धरोहर के लिए उज्जैन प्रसिद्ध है। इन्हीं धरोहरों में एक है उज्जैन की प्राचीन वेधशाला। इसे स्थानीय लोग 'यंत्र-महल' के नाम से जानते हैं। यह वेधशाला शिप्रा नदी के दक्षिणी तट पर चिंतामन रोड पर स्थित है। कभी समय निर्धारण का आधार मानी जाने वाली यह वेधशाला आज भी खगोल प्रेमियों के अध्ययन और अनुसंधान का महत्वपूर्ण स्थल है।

शहर के दक्षिण की ओर क्षिप्रा के दाहिनी तरफ जयसिंहपुर में बनी यह वेधशाला 'जंतर महल' के नाम से भी जानी जाती है। इसका निर्माण जयपुर के महाराजा जयसिंह ने वर्ष 1733 ईस्वी में करवाया था। राजा जयसिंह ने उज्जैन के साथ-साथ काशी, मथुरा और जयपुर में भी वेधशाला का निर्माण करवाया था। वर्तमान में केवल उज्जैन की वेधशाला ही सुचारू रूप से कार्यरत है। वेधशाला के यंत्रों की सन् 1925 में महाराजा माधवराव सिंधिया ने मरम्मत करवाई थी। देशांतर रेखा उज्जैन से होकर गुजरती है इसलिए खगोलशास्त्र में इसका विशेष महत्व है। वेधशाला में स्थापित यंत्रों की मदद से ग्रहण और अन्य खगोलीय घटनाओं का अवलोकन किया जा सकता है।

श्री चिंतामन गणेश मंदिर

माना जाता है कि मूल मंदिर रामायण काल का है और इसकी स्थापना सीताजी ने की थी। मंदिर का वर्तमान स्वरूप 18वीं शताब्दी में महारानी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा बनवाया गया था। यह मंदिर क्षिप्रा नदी के पार फतेहाबाद रोड़ पर उज्जैन शहर से लगभग 7 किलोमीटर

दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।

मंदिर में गणेश जी की स्वयंभू मूर्ति है। यहाँ गणेश जी की तीन प्रतिमाएं हैं: चिंतामन (चिंता हरने वाले), इच्छामन (इच्छा पूरी करने वाले) और सिद्धिविनायक (कार्य सिद्ध करने वाले), जो पत्नियों रिद्धि-सिद्धि के साथ विराजमान हैं।

पौराणिक मान्यता के अनुसार, भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण के साथ अपने वनवास काल के दौरान यहां आए थे। यहां माता सीता को प्यास लगी, लेकिन आस-पास पानी नहीं था। तब लक्ष्मण जी ने अपने बाण से भूमि पर प्रहार किया, जिससे वहां एक जलधारा फूट निकली। इसी स्थान पर बाद में एक बावड़ी का निर्माण हुआ, जो आज भी मंदिर परिसर में मौजूद है और इसे पवित्र माना जाता है।

इस मंदिर की एक अनोखी और प्रसिद्ध परंपरा है। भक्त यहां अपनी मनोकामना लेकर आते हैं और भगवान गणेश के सामने उल्टा स्वस्तिक बनाते हैं। जब उनकी मनोकामना पूरी हो जाती है, तो वे वापस आकर सीधा स्वास्तिक बनाकर भगवान का आभार व्यक्त करते हैं।

श्री अष्टविनायक मंदिर

अष्टविनायक महाराष्ट्र में पुणे, रायगढ़ और अहमदनगर जिलों के आसपास स्थित भगवान गणेश के आठ पवित्र स्वयंभू मंदिरों की एक प्रसिद्ध तीर्थयात्रा है। यह मंदिर मयूरेश्वर (मोरेश्वर) मोरगाँव, पुणे- सिद्धिविनायक सिद्धटेक, अहमदनगर- बल्लालेश्वर पाली रायगढ़, वरदविनायक- महड़ रायगढ़, चिंतामणी- थेऊर पुणे, गिरिजात्मज- लेण्याद्री पुणे, विघ्नेश्वर- ओझर पुणे, महागणपति- राजणगाँव, पुणे में स्थित है। इनकी यात्रा मोरगांव के मयूरेश्वर मंदिर से प्रारंभ होकर वहीं समाप्त होती है।

भगवान गणेश के इन अष्टविनायक रूप को उज्जैन में उज्जैन जावरा बाईपास रोड पर नवनिर्मित अष्टविनायक मंदिर में एक साथ स्थापित किया गया है। लाल पत्थर से निर्मित मंदिर सुंदर और दर्शनीय है।

श्री इस्कॉन मंदिर

इस्कॉन (द इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ कृष्णा कॉन्शसनेस) मंदिर, उज्जैन भगवान कृष्ण का एक लोकप्रिय मंदिर है। इस्कॉन मंदिर नानाखेड़ा बस स्टैंड के पास स्थित है।

इस्कॉन मंदिर एक आध्यात्मिक अभयारण्य है। इस्कॉन मंदिर अपनी शानदार सफेद संगमरमर की वास्तुकला के लिए जाना जाता है। यह शांत मंदिर परिसर न केवल देखने में मनमोहक है, बल्कि आध्यात्मिक गतिविधियों का केंद्र भी है।इस्कॉन मंदिर में राधा मदन मोहन और कृष्ण बलराम सहित सभी देवी-देवताओं को जीवंत, हस्तनिर्मित वस्त्रों से सजाया गया है।

मंदिर के मुख्य देवता भगवान कृष्ण हैं, जिन्हें भगवान विष्णु का आठवां अवतार भी कहा जाता है। मंदिर में राधा, बलराम और गौरांग सहित विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं की अन्य मूर्तियां भी स्थापित हैं। ये सभी मूर्तियाँ अत्यंत सुंदर ढंग से बनाई गई हैं और मंदिर की आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ाती हैं।

मंदिर वर्ष भर कई त्योहारों और उत्सवों का आयोजन भी करता है। अपनी आध्यात्मिक महत्ता के अलावा, उज्जैन स्थित इस्कॉन मंदिर सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों का भी केंद्र है। यहाँ एक वैदिक गुरुकुल है, जहाँ विश्व भर से छात्र प्राचीन ग्रंथों और वैदिक सिद्धांतों का अध्ययन करने आते हैं।

श्री प्रशांति धाम

प्रशांति धाम इंदौर रोड पर अभिषेक नगर में स्थित एक प्रमुख आध्यात्मिक स्थल है। यह स्थान साई बाबा मंदिर, धार्मिक गतिविधियों और ध्यान के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान मुख्य रूप से एक शांत माहौल में नियमित आध्यात्मिक गतिविधियों और प्रवचनों के लिए भी जाना जाता है। इस परिसर में कई मंदिर हैं। हर मंदिर बारीक नक्काशी और शानदार मूर्तियों से सजा है।

इस जगह को आध्यात्मिक और मनोरंजक, दोनों तरह के आनंद के लिए डिज़ाइन किया गया है। पूजनीय देवी-देवताओं को समर्पित कई मंदिरों के साथ-साथ, साई बाबा की एक विशाल और विस्मयकारी मूर्ति इस परिसर के केंद्र में स्थित है। 2016 के सिंहस्थ महाकुंभ के समय भक्तों के स्नान के लिए मंदिर धाम के समीप क्षिप्रा नदी के तट पर प्रशांति धाम घाट का निर्माण किया गया था।

श्री नवग्रह शनि मंदिर

लगभग 2000 साल पुराना यह मंदिर त्रिवेणी घाट के किनारे, शिप्रा नदी के पास स्थित है। शनि मंदिर, न्याय और कर्म के देवता शनि को समर्पित एक उल्लेखनीय नवग्रह मंदिर है। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण राजा विक्रमादित्य ने करवाया था।

यह मंदिर अपने नौ ग्रहों के शिवलिंग और शनिदेव के विशेष पिंडी स्वरूप के लिए जाना जाता है, जहाँ शनिवार और शनि अमावस्या पर भक्तों की भारी भीड़ रहती है। यहाँ शनिदेव की प्रतिमा भगवा रंग की है। यहां पर तीन नदियों शिप्रा, गंडकी और सरस्वती का संगम इस स्थान को पवित्र बनाता है इसलिए इसे त्रिवेणी संगम भी कहा जाता है।

नवग्रह शनि मंदिर में नवग्रह दोष शांति पूजा, कुंडली में अशुभ ग्रहों के नकारात्मक प्रभावों (जैसे स्वास्थ्य, करियर, विवाह में बाधा) को दूर करने के लिए की जाने वाली एक अत्यंत प्रभावशाली वैदिक पूजा है। यह पूजा ग्रहों को संतुलित करती है और जीवन में समृद्धि, शांति और सफलता लाती है।

शनि मंदिर में शनिवार के दिन सरसों या तिल का तेल, काले तिल, काली उड़द की दाल, नीले/काले फूल और काला कपड़ा चढ़ाना सबसे उत्तम माना जाता है। इसके साथ ही, शनिदेव को काले चने, खिचड़ी या मीठी पूरी का भोग लगाना चाहिए। लोहे की वस्तुएं या सरसों के तेल का दीपक जलाना लाभकारी होता है।

शनिदेव को तेल चढ़ाते समय दृष्टि उनके चरणों पर होना चाहिए। सीधे आँखों में न देखें। पूजा में तांबे के बर्तनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। शनिदेव की प्रतिमा के सीधे सामने न खड़े होकर, थोड़ा दाईं या बाईं ओर खड़े होकर दर्शन करना चाहिए।इस मंदिर में दर्शन के बाद शनि साढ़ेसाती, पितृ दोष, कालसर्प योग, अशुभ ग्रह योग सहित अन्य कठिनाइयों से मुक्ति मिलती है। स्थानीय परंपरा के अनुसार, कष्टग्रस्त भक्त मंदिर में चप्पल और वस्त्र छोड़ आते हैं, जिससे शारीरिक और मानसिक परेशानियों से मुक्ति मिलती है।

पंचक्रोशी यात्रा (उज्जैन)

मान्यता है कि पंचकोशी की तीर्थयात्रा करने से पृथ्वी की संपूर्ण यात्रा पूर्ण हो जाती है और सभी बुरे कर्मों का नाश हो जाता है।पंचकोशी की यह पावन यात्रा 118 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए भगवान महादेव के पांच प्रमुख मंदिरों से होकर गुजरती है। मान्यता है कि इस यात्रा से पापों का नाश होता है और जीवन में सुख-समृद्धि आती है। इस यात्रा का प्रारंभ कब हुआ, इसका स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता है, लेकिन विद्वानों के अनुसार यह परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है। यात्रा के दौरान उज्जैन में स्थापित 84 महादेव मंदिरों की परिक्रमा की जाती है, जिन्हें महाकाल का द्वारपाल और नगर का रक्षक माना जाता है। यात्रा के पांच मुख्य पड़ाव पिंगलेश्वर, कायावरोहण (कायाणेश्वर), बिल्वोदक (बिल्वेश्वर), दुर्दरेश्वर, और नागचंद्रेश्वर (नागेश्वर) हैं।

वर्तमान में इस पवित्र पंचक्रोशी यात्रा का श्री नागचंद्रेश्वर के दर्शन पूजन से प्रारंभ और समापन होता है। वैशाख वदी दशमी से चौदश तक पांच दिवस की यह यात्रा है। ब्रह्म मुहूर्त में शिप्रा स्नान, भगवान श्री महाकालेश्वर तथा पटनी बाजार स्थित श्रीनागचंद्रेश्वर महादेव के दर्शन कर यात्रा प्रारंभ की जाती है। यात्रीगण यहां भगवान नागचंद्रेश्वर से शक्ति का आशीर्वाद लेकर यात्रा प्रारंभ करते हैं। मान्यता है कि यहां नारियल अर्पित करने से यात्री को घोड़े जैसा बल और ऊर्जा मिलती है।

यहाँ से यात्रा प्रारंभ कर छत्री चौक, श्री खड़े हनुमान, सराफा, रामजी की गली में होते हुए श्री बृहस्पतेश्वर महादेव के दर्शन पश्चात् कंठाल नजरअली मार्ग से हीरामिल, पिल्याखाल, वेश्याटेकरी के पास से उंडासा ग्राम होते हुए श्री पिंगलेश्वर महादेव के दर्शन कर पहला रात्रि विश्राम वही किया जाता है। श्री पिंगलेश्वर महादेव अवन्तिका क्षेत्र के पूर्व द्वार के द्वारपाल हैं।

द्वितीय दिवस यात्रीगण यहाँ से दक्षिण दिशा की ओर रेल्वे लाईन के ब्रिज को पार करके मक्सी मार्ग पर हिंरण बंगला, करोंदिया, ग्राम दत्रावदा, लालपुर ग्राम होते हुए इन्दौर ब्राडगेज रेलवे को पार करके देवास रोड़ छपापड़िया, मालनवासा, पिपल्याराधो, छायन, कोकल्याखेड़ी होकर दूसरे रात्रि स्थल कायोवरोहणेश्वर महादेव पहुँचते हैं। श्री कायावरोहणेश्वर महादेव दक्षिण द्वार के द्वारपाल हैं।

तृतीय दिवस श्री कायावरोहणेश्वर महादेव से पश्चिम की और प्रस्थान करते हुए गोंदिया ग्राम, तालोद ग्राम, बामोरा ग्राम होते हुए दोपहर तक नलवा पहुँच जाते हैं। दोपहर विश्राम बाद पुनः यात्रा प्रारंभ कर दी जाती है। यात्रीगण खरेट पिड़वई ग्राम होते हुए विश्राम स्थल श्री बिल्केश्वर महादेव के पास पहुँच जाते हैं।

चतुर्थ दिवस श्री बिल्केश्वर महादेव से अंबोदिया ग्राम, नईखेड़ी ग्राम, बड़ोदिया ग्राम, आजमपुरा ग्राम होते हुए, सोडंग ग्राम से कालियादेह महल पर शिप्रा नदी में स्नान पूजन करते हुए बोरमूंडला ग्राम होकर श्री दुरदुरेश्वर महादेव पहुँच जाते हैं। श्री दुरदुरेश्वर महादेव अवन्तिका के उत्तर दिशा के द्वारपाल हैं।

पंचम दिवस जेथल ग्राम, आगररोड़, ढाबला ग्राम, नरान्या ग्राम, बरवान्या ग्राम होते हुए पिंगलेश्वर महादेव आते हैं। इसके पश्चात् यात्रीगण हीरा मिल्स से हास्पिटल रोड़ देवास गेट, दौलतगंज, फव्वारा चौक, कंठाल, सराफा, गोपाल-मंदिर, पटनी बाजार होकर श्री नागचंद्रेश्वर महादेव के दर्शन कर घर जाने के पूर्व निर्विघ्न यात्रा सम्पन्न करने हेतु उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर, यात्रा प्रारंभ करते समय जो बल मांगा था, उसे वापिस किया जाता है।

जब तक श्री नागचंद्रेश्वर भगवान का बल रहता है तब तक यात्रीगण को किसी प्रकार की थकान मालूम नहीं होती पर जैसे ही बल लौटा दिया जाता है वैसे ही थकान महसूस होने लगती है। इसे चाहे अंधश्रद्धा, अंधविश्वास कहे किंतु मनोवैज्ञानिक आधार पर यह पूर्ण सत्य ही है।

प्रेरणा

अनंत भूतभावन महाकाल के प्रति विनम्र पुष्पांजलि की प्रेरणा स्वान्तः सुखाय जन मानस के हित में महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर मन में प्रकट हुई :-

भवानी शंकरो वन्दे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां बिना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वन्तिः स्थमीश्वस्य।।

अर्थात श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप भगवान महाकाल की मैं वन्दना करता हूं जिसके बिना सिद्धजन अपने अन्तःकरण में विद्यमान ईश्वर को देख नहीं सकते। उनके ही श्रीचरणों में श्रद्धा के कुछ फूल सादर समर्पित है।

मंगलमयी, महाकल्याणकारी, कलयुग के सर्वसुलभ एवं सर्वफलदायी महाकाल की सदैव आराधाना करें। पुस्तक लेखन के प्रेरणास्त्रोत श्री प्रकाश जी खण्डेलवाल गोवर्धनधाम नगर है।

अशोक खण्डेलवाल

अध्यक्ष - श्री चिकित्सा संसार पारमार्थिक न्यास

सम्पादक- चिकित्सा संसार पत्र/पत्रिका

71, साईनाथ कॉलोनी, अलखधाम नगर, उज्जैन (म.प्र.)

मो. 939008071, 9425092492

* * *

6000 पाठकों को निःशुल्क भेजी जा रही है। प्रति पुस्तक 30 रुपये मूल्य देकर अतिरिक्त प्रति मंगवा सकते है अगले प्रकाशन में सहयोग कर अपना नाम अंकित करवाकर स्वस्थ और निरोगी रहने की सेवाओं में हाथ बटाएं। इस पर्वपद्र में आपकी आहुति महाकाल का स्मरण और सेवा आपके जीवन में खुशियां का स्वर्ग लेकर आयेगी।